قَالَ الْمَلَاُ الَّذِیْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ یٰشُعَیْبُ وَ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْیَتِنَاۤ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِیْ
مِلَّتِنَاؕ قَالَ اَوَ لَوْ كُنَّا كٰرِهِیْنَ ﴿۸۸﴾ قَدِ افْتَرَیْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِیْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَاؕ
وَ مَا یَكُوْنُ لَنَاۤ اَنْ نَّعُوْدَ فِیْهَاۤ اِلَّاۤ اَنْ یَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَاؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَیْءٍ عِلْمًاؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَاؕ رَبَّنَا
افْتَحْ بَیْنَنَا وَ بَیْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَ اَنْتَ خَیْرُ الْفٰتِحِیْنَ ﴿۸۹﴾ وَ قَالَ الْمَلَاُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَىِٕنِ اتَّبَعْتُمْ
شُعَیْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿۹۰﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِیْ دَارِهِمْ جٰثِمِیْنَ ﴿۹۱﴾ الَّذِیْنَ كَذَّبُوْا شُعَیْبًا كَاَنْ
لَّمْ یَغْنَوْا فِیْهَا ۚۛ اَلَّذِیْنَ كَذَّبُوْا شُعَیْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِیْنَ ﴿۹۲﴾ فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَ قَالَ یٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ
رِسٰلٰتِ رَبِّیْ وَ نَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَیْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِیْنَ ﴿۹۳﴾

आयत न० 88 से 93

उन की क़ौम के घमन्डी सरदारों ने (जो ये बातें सुनीं तो उन्होंने बेअदबी से) **कहा कि ऐ शुऐब** (याद रखिए) **हम आप को और आप के साथ सभी ईमान लाने वालों को अपने शहर से निकाल देंगे या यह हो कि तुम हमारे दीन में फिर आजाओ** (तो हम कुछ न कहेंगे, क्योंकि मुसलमान ईमान लाने से पहले उन के दीन पर थे और हज़रत शुऐब अलैहिस्सलाम पैग़म्बरी मिलने से पहले उनके दीन के बारे में कुछ नहीं कहते थे इसलिए उन को भी अपने दीन पर समझते थे)**, शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **ने जवाब दिया कि क्या हम तुम्हारे दीन में आजाएं चाहे हम उसे नापसन्द ही करते हों** (यानी जब इस के झूटा होने पर दलील मौजूद है तो इस को कैसे अपनाएं)(88) **हम तो अल्लाह पर बड़ा झूटा इल्ज़ाम लगाने वाले हो जाएं अगर** (ख़ुदा न करे) **हम तुम्हारे दीन में आजाएं** (ख़ास कर) **जब कि अल्लाह तआ़ला ने हम को इससे बचा रक्खा है, और हम से यह नहीं हो सकता कि तुम्हारे दीन की तरफ़ आजाएं लेकिन हां अल्लाह ही ने जो हमारा मालिक है** (हमारे) **नसीब** (में) **किया हो** (तो और बात है)**, हमारे रब ने हर चीज़ को अपने इल्म के घेरे में ले रक्खा है, हम अल्लाह ही पर भरोसा रखते हैं** (और भरोसा करके यह उम्मीद रखते हैं कि वो हम को सच्चे दीन पर जमाए रक्खे, और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि) **या हमारे रब हमारे और हमारी** (इस) **क़ौम के बीच फ़ैसला कर दीजिए** (जो कि सदा) **हक़ के मुवाफ़िक़** (हुआ करता है) **और आप सब से अच्छा फ़ैसला करने वाले हैं** (89) **और उन की क़ौम के** (उन्हीं) **काफ़िर सरदारों ने** (शुऐब अलैहिस्सलाम का बयान सुन कर सोचा कि कहीं सुनने

वालों पर इस का असर न हो जाए इसलिए उन्होंने बाक़ी काफ़िरों से) **कहा कि अगर तुम शुऐब** (अ़लैहिस्सलाम) **के रास्ते पर चलोगे तो बेशक बड़ा नुक़सान उठाओगे** (दीन का भी क्योंकि हमारा दीन सच्चा है और दुनिया का भी कि पूरा नापने तौलने में बचत कम होगी)**(90) सो** (जब वो सब अपने कुफ़्र व ज़ुल्म पर जमे रहे तो अब अज़ाब शुरू हुआ और) **उन को ज़लज़ले ने पकड़ा तो अपने घर में ओंधे के ओंधे पड़े रह गये(91) जिन्होंने शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **को झुटलाया था** (और मुसलमानों को उनके घरों से निकालने को तैयार थे ख़ुद) **उन की यह हालत हो गई जैसे उन घरों में कभी बसे ही न थे जिन्होंने शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **को झुटलाया** (और उन के मानने वालों को नुक़सान उठाने वाला कहते थे) **वो ही नुक़सान में पड़ गये(92) उस वक़्त शुऐब** (अलैहिस्सलाम) **उन से मुंह मोड़ कर चले और कहने लगे कि ऐ मेरी क़ौम मैंने तो तुम को अपने रब के हुक्म पहुंचा दिये थे** (जिन पर चलने में हर तरह की कामयाबी थी) **और मैंने तुम्हारी** (बड़ी) **भलाई चाही** (कि किस किस तरह समझाया मगर अफ़सोस तुम ने नहीं माना और यह बुरा दिन देखना पड़ा और जब अपने हाथों यह मुसीबत ख़रीदी तो) **फिर मैं इन काफ़िर लोगों** (के हलाक होने) **पर क्यों ग़म करूं(93)।**

وَمَآ اَرۡسَلۡنَا فِىۡ قَرۡيَةٍ مِّنۡ نَّبِىٍّ اِلَّاۤ اَخَذۡنَاۤ اَهۡلَهَا بِالۡبَاۡسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمۡ يَضَّرَّعُوۡنَ ﴿۹۴﴾ ثُمَّ بَدَّلۡنَا مَكَانَ
السَّيِّئَةِ الۡحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوۡا قَدۡ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذۡنٰهُمۡ بَغۡتَةً وَّهُمۡ لَا يَشۡعُرُوۡنَ ﴿۹۵﴾
وَلَوۡ اَنَّ اَهۡلَ الۡقُرٰٓى اٰمَنُوۡا وَاتَّقَوۡا لَفَتَحۡنَا عَلَيۡهِمۡ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالۡاَرۡضِ وَلٰـكِنۡ كَذَّبُوۡا فَاَخَذۡنٰهُمۡ بِمَا
كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿۹۶﴾ اَفَاَمِنَ اَهۡلُ الۡقُرٰٓى اَنۡ يَّاۡتِيَهُمۡ بَاۡسُنَا بَيَاتًا وَّهُمۡ نَآئِمُوۡنَ ﴿۹۷﴾ اَوَ اَمِنَ اَهۡلُ الۡقُرٰٓى اَنۡ
يَّاۡتِيَهُمۡ بَاۡسُنَا ضُحًى وَّهُمۡ يَلۡعَبُوۡنَ ﴿۹۸﴾ اَفَاَمِنُوۡا مَكۡرَ اللّٰهِ‌ ۚ فَلَا يَاۡمَنُ مَكۡرَ اللّٰهِ اِلَّا الۡقَوۡمُ الۡخٰسِرُوۡنَ ﴿۹۹﴾

आयत न० 94 से 99

और हम ने जिस किसी (भी) **शहर में कोई पैग़म्बर भेजा वहां के रहने वालों को** (पहले) **हमने ग़रीबी और बीमारी में पकड़ा ताकि वो ढीले पड़ जाएं** (और अपने कुफ़्र व झुटलाने से तौबा करें)**(94) फिर** (जब इससे न माने तो ढील देने के लिए) **हम ने उस बदहाली की जगह ख़ुशहाली बदल दी यहां तक कि उन को** (बेफ़िक्री और सहत के साथ माल और औलाद में) **ख़ूब तरक़्क़ी हुई और** (शुक्र करने के बजाए वो) **कहने लगे कि दुःख सुख तो हमारे बाप दादों को**

भी पहुंचते रहे हैं (ऐसे ही ये भी है बस वो इस भूल में पड़ गये) **तो** (उस वक़्त) **हम ने उन को अचानक** (सख़्त अज़ाब में) **पकड़ लिया और उन को** (उस अज़ाब के आने की) **ख़बर भी न थी** (यानी पैग़म्बरों ने भले ही उन को ख़बर दी थी मगर वो उस ख़बर पर यक़ीन नहीं रखते थे)(95) **और अगर उन शहरों के रहने वाले** (पैग़म्बरों पर) **ईमान ले आते और** (उन की मुख़ालफ़त से) **परहेज़ रखते तो हम** (अज़ाबों के बजाए) **उन पर आसमान और ज़मीन की बरकतें खोल देते** (यानी आसमान से बारिश और ज़मीन से पैदावार उन को बरकत के साथ देते) **लेकिन उन्होंने तो** (पैग़म्बरों को) **झुटलाया तो हम ने** (भी) **उनके** (बुरे) **कामों की वजह से उन को** (हलाक करने वाले अज़ाब में) **पकड़ लिया(96) क्या** (इन क़िस्सों को सुनकर) **फिर भी इन शहरों के रहने वाले** (जो रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहु अलैहि वसल्लम के दौर में मौजूद हैं) **इस बात से बेफ़िक्र हो गये हैं कि उन पर** (भी) **हमारा अज़ाब रात के वक़्त आजाए जिस वक़्त वो सोते हों (97) और क्या इन शहरों के रहने वाले इस बात से बेफ़िक्र हो गये हैं कि** (उन्हीं पहले काफ़िरों की तरह) **उन पर हमारा अज़ाब दिन चढ़े आजाए जिस वक़्त कि वो खेल तमाशों** (और दुनिया के कारोबार) **में लगे हों(98) भला क्या** (ये लोग) **अल्लाह तआला की इस** (अचानक) **पकड़ से** (जिस का ऊपर बयान हुआ है) **बेफ़िक्र हो गये हैं तो** (समझ रक्खो कि) **अल्लाह तआला की पकड़ से सिवाए उन के जिन की शामत ही आ गई हो और कोई बेफ़िक्र नहीं होता(99)।**

नोटः- मतलब यह है कि जो लोग दुनिया की ऐश व आराम में मस्त हो कर अल्लाह तआला को भुला बैठते हैं उन को इस बात से बेफ़िक्र न होना चाहिए कि अल्लाह तआला का अज़ाब उन पर किसी वक़्त किसी भी हालत में आ सकता है जैसा कि पहली क़ौमों के क़िस्सों से पता चलता है।

اَوَ لَمۡ يَهۡدِ لِلَّذِيۡنَ يَرِثُوۡنَ الۡاَرۡضَ مِنۡۢ بَعۡدِ اَهۡلِهَاۤ اَنۡ لَّوۡ نَشَآءُ اَصَبۡنٰهُمۡ بِذُنُوۡبِهِمۡ‌ۚ وَنَطۡبَعُ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ
فَهُمۡ لَا يَسۡمَعُوۡنَ ﴿۱۰۰﴾ تِلۡكَ الۡقُرٰى نَقُصُّ عَلَيۡكَ مِنۡ اَنۡۢبَآئِهَا‌ۚ وَلَقَدۡ جَآءَتۡهُمۡ رُسُلُهُمۡ بِالۡبَيِّنٰتِ‌ۚ فَمَا كَانُوۡا
لِيُؤۡمِنُوۡا بِمَا كَذَّبُوۡا مِنۡ قَبۡلُ‌ؕ كَذٰلِكَ يَطۡبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِ الۡكٰفِرِيۡنَ ﴿۱۰۱﴾ وَمَا وَجَدۡنَا لِاَكۡثَرِهِمۡ مِّنۡ عَهۡدٍ‌ۚ وَ
اِنۡ وَّجَدۡنَاۤ اَكۡثَرَهُمۡ لَفٰسِقِيۡنَ ﴿۱۰۲﴾

आयत न० 100 से 102

और उन (पहले) **ज़मीन पर बसने वालों के बाद जो लोग** (अब) **ज़मीन पर उन की जगह रहते हैं क्या इन क़िस्सों से उन्होंने यह सबक़ नहीं लिया कि अगर हम चाहते तो उन**

को भी (पहली उम्मतों की तरह) **उन के गुनाहों** (कुफ़्र व झुटलाने) **की वजह से हलाक कर देते** (क्योंकि पहली उम्मतें इनही गुनाहों की वजह से हलाक की गईं), **और** (सचमुच ये क़िस्से तो ऐसे ही हैं कि इन से सबक़ लेना चाहिए था लेकिन असल बात यह है कि) **हम इन के दिलों पर बन्द लगाए हुए हैं इससे वो** (हक़ बात को दिल से) **सुनते** (भी) **नहीं** (फिर मानना तो दूर रहा)(100) **उन शहरों के कुछ क़िस्से हम आप से बयान कर रहे हैं और उन सब** (शहरों में रहने वालों) **के पास उन के पैग़म्बर मोजिज़े लेकर आए थे,** (मगर) **फिर** (भी उन की ज़िद और हटधर्मी की यह हालत थी कि) **जिस चीज़ को उन्होंने पहली बार में झूटा कह दिया यह बात न हुई कि फिर उस को मान लेते,** (और जैसे ये दिल के सख़्त थे) **अल्लाह तआला इसी तरह काफ़िरों के दिलों पर बन्द लगा देते हैं**(101) **और** (उन में से कुछ लोग मुसीबतों में ईमान लाने का एहद भी कर लेते थे लेकिन) **अक्सर लोगों में हम ने एहद की वफ़ादारी न देखी** (यानी मुसीबत चले जाने के बाद फिर वैसे के वैसे ही हो जाते थे), **और हम ने अक्सर लोगों को** (पैग़म्बर भेजने और मोजिज़े दिखाने के बाद भी) **नाफ़रमान ही पाया** (बस काफ़िर सदा से ऐसे ही होते आए हैं आप भी ग़म न कीजिए)(102)।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ وَ مَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۰۳﴾ وَ قَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۴﴾ حَقِيْقٌ عَلٰۤى اَنْ لَّاۤ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا
الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۰۵﴾ قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَاۤ
اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿۱۰۶﴾ فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ﴿۱۰۷﴾ وَّ نَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ
لِلنّٰظِرِيْنَ ﴿۱۰۸﴾ قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۰۹﴾ يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ فَمَاذَا
تَاْمُرُوْنَ ﴿۱۱۰﴾

आयत न० 103 से 110

फिर उन (पैग़म्बरों) **के बाद हम ने** (हज़रत) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को अपनी निशानियां** (यानी मोजिज़े) **देकर फ़िरऔन के और उस के सरदारों के पास** (उन की हिदायत व तबलीग़ के लिए) **भेजा तो** (जब मूसा अलैहिस्सलाम ने वो मोजिज़े दिखाए तो) **उन लोगों ने उन** (मोजिज़ों) **का बिल्कुल हक़ अदा न किया** (क्योंकि उन का हक़ यह था कि ईमान ले आते), **फिर देखिए उन फ़साद फैलाने वालों का क्या** (बुरा) **अन्जाम हुआ**(103) **और मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अल्लाह के

हुक्म से फ़िरऔन के पास जाकर) **कहा कि मैं सारे जहानों के रब की तरफ़ से** (तुम लोगों की हिदायत के वास्ते) **पैग़म्बर** (बनाकर भेजा गया) **हूं(104)** (जो मुझ को झूटा बताए वो ग़लती पर है क्योंकि) **मेरा ये ही फ़र्ज़ है कि सिवाए सच के अल्लाह के बारे में कोई बात न कहूं,** (और) **मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी निशानी** (यानी मोजिज़ा) **भी लाया हूं** (जो मांगने पर दिखा सकता हूं) **सो** (मेरी बात मानो और) **तुम बनी इस्राईल को** (अपनी बेगार से आज़ाद करके) **मेरे साथ** (उन के असली वतन मुल्क शाम) **भेज दो(105) फ़िरऔन ने कहा कि अगर आप** (अल्लाह की तरफ़ से) **कोई मोजिज़ा लेकर आए हैं तो उस को दिखाइये अगर आप** (इस दावे में) **सच्चे हैं(106) बस आपने** (फ़ौरन) **अपना अ़सा** (यानी लाठी को ज़मीन पर) **डाल दिया तो अचानक वो एक साफ़ अज़्दहा** (यानी अजगर) **बन गया** (जिस के अज़्दहा होने में कोई शक नहीं हो सकता था)**(107) और** (दूसरा मोजिज़ा यह दिखाया कि) **अपना हाथ** (गरीबान के अन्दर बग़ल में दबाकर) **बाहर निकाल लिया तो वो अचानक सब देखने वालों के सामने बहुत ही चमकता हुआ हो गया (108)** (ये मोजिज़े देख कर फ़िरऔन ने दरबार वालों से कहा कि यह आदमी बड़ा जादूगर है यह चाहता है कि अपने जादू से तुम लोगों पर हावी होकर यहां का हाकिम हो जाए दरबार वालों ने बादशाह की हां में हां मिलाई और) **फिर फ़िरऔन की क़ौम में जो सरदार लोग थे उन्होंने** (एक दूसरे से) **कहा कि सचमुच** (जैसा हमार बादशाह कहते हैं कि) **यह आदमी बड़ा माहिर जादूगर है(109)** (ज़रूर) **यह** (ये ही) **चाहता है कि** (अपने जादू के ज़ोर से ख़ुद हाकिम हो जाए और) **तुम को तुम्हारे मुल्क से बाहर कर दे सो तुम लोग** (जैसा कि बादशाह पूछ रहे हैं) **क्या मशवरा देते हो(110)।**

नोटः- हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० का बयान है कि उस अज़्दहा ने फ़िरऔन की तरफ़ मुंह फैलाया तो घबरा कर शाही कुर्सी से कूद कर हज़रत मूसा की पनाह ली और दरबार के हज़ारों आदमी उस की दहशत से मर गये।

قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَ اَخَاهُ وَ اَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ﴿۱۱۱﴾ يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ﴿۱۱۲﴾ وَ جَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا
اِنَّ لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿۱۱۳﴾ قَالَ نَعَمْ وَ اِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿۱۱۴﴾ قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَ
اِمَّآ اَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ النَّاسِ وَ اسْتَرْهَبُوْهُمْ وَ جَآءُوْ بِسِحْرٍ
عَظِيْمٍ ﴿۱۱۶﴾ وَ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَ بَطَلَ مَا كَانُوْا

يَعْمَلُوْنَ ۝١١٨ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ۝١١٩ وَ اُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝١٢٠ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٢١
رَبِّ مُوْسٰى وَ هٰرُوْنَ ۝١٢٢

आयत न० 111 से 122

(बस आपस में राय करके) **उन्होंने** (फ़िरऔन से) **कहा कि आप इन** (मूसा अलैहिस्सलाम) **को और इन के भाई को मोहलत दीजिए और** (अपने मुल्क के) **शहरों में चपरासियों को** (हुक्म नामे देकर) **भेज दीजिए(111) ताकि वो** (सब शहरों से) **सब माहिर जादूगरों को** (जमा करके) **आप के पास ले आएं** (बस ऐसा ही किया गया)(112) **और वो जादूगर फ़िरऔन के पास आगये** (और) **कहने लगे कि अगर हम** (मूसा अ़लैहिस्सलाम से मुक़ाबिले में) **जीत गये तो** (क्या) **हम को कोई बड़ा इनआ़म मिलेगा(113) फ़िरऔन ने कहा कि हां** (इनआ़म भी बड़ा मिलेगा) **और तुम** (हमारे) **ख़ास** (नज़दीकी) **लोगों में दाख़िल हो जाओगे(114)** (बस जब मुक़ाबिला हुआ तो) **उन जादूगरों ने** (मूसा अलैहिस्सलाम से) **कहा कि ऐ मूसा चाहे आप** (पहले अपना अ़सा मैदान में) **डालिए** (जिस को आप अपना मोजिज़ा बताते हैं) **और या** (आप कहें तो) **हम ही** (अपनी रस्सियां और लाठियां मैदान में) **डालें(115) मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि तुम ही** (पहले) **डालो, जब उन्होंने** (अपनी रस्सियों और लाठियों को) **डाला तो** (देखने वाले) **लोगों** (की आंखों) **पर जादू कर दिया** (जिससे वो लाठियां और रस्सियां सांप की तरह लहराती दिखाई देने लगीं) **और उन को डरा दिया और एक तरह का बड़ा जादू दिखाया(116) और** (उस वक़्त) **हमने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को** (वही के वास्ते से) **हुक्म दिया कि आप अपना अ़सा डाल दीजिए** (जैसा डाला करते हैं) **सो असा का डालना था कि उसने** (अज़दहा बन कर) **उनके सारे बने बनाए खेल को निगलना शुरू किया(117) बस** (उस वक़्त) **हक़ खुल कर सामने आ गया और उन्होंने** (यानी जादूगरों ने) **जो कुछ बनाया था सब मिलया मेट हो गया(118) बस वो लोग** (यानी फ़िरऔन और उस की क़ौम) **उस मौक़े पर हार गये और ख़ूब ज़लील हुए** (और अपना सा मुंह लेकर रह गये)(119) **और वो सब जादूगर सजदे में गिर गये(120)** (और पुकार पुकार कर) **कहने लगे कि हम ईमान ले आए सारे जहानों के रब पर(121) जो मूसा और हारून** (अलैहिमुस्सलाम) **का भी रब है(122)।**

नोटः- जादूगर मुक़ाबिले के लिए जो रस्सियां और लाठियां सांप बनाने के लिए लाए थे वो तीन सौ ऊंटों पर लाद कर लाई गई थीं जिन से बने सांपों को मूसा अलैहिस्सलाम के मोजिज़े वाले अज़दहा ने मुक़ाबिले वक़्त निगल लिया फिर उन का कहीं पता न चला जिस को देख कर

जादूगर बोल उठे कि यह जादू नहीं पैग़म्बरी मोजिज़ा है और ईमान ले आए। और लिखा है कि उन जादूगरों के सरदारों के साथ फिरऔन की क़ौम के 6 लाख आदमी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आए।

قَالَ فِرۡعَوۡنُ اٰمَنۡتُمۡ بِهٖ قَبۡلَ اَنۡ اٰذَنَ لَكُمۡ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكۡرٌ مَّكَرۡتُمُوۡهُ فِى الۡمَدِيۡنَةِ لِتُخۡرِجُوۡا مِنۡهَاۤ اَهۡلَهَا ۚ
فَسَوۡفَ تَعۡلَمُوۡنَ ﴿۱۲۳﴾ لَاُقَطِّعَنَّ اَيۡدِيَكُمۡ وَ اَرۡجُلَكُمۡ مِّنۡ خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ﴿۱۲۴﴾ قَالُوۡۤا اِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا
مُنۡقَلِبُوۡنَ ﴿۱۲۵﴾ وَ مَا تَنۡقِمُ مِنَّاۤ اِلَّاۤ اَنۡ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتۡنَا ؕ رَبَّنَاۤ اَفۡرِغۡ عَلَيۡنَا صَبۡرًا وَّ تَوَفَّنَا
مُسۡلِمِيۡنَ ﴿۱۲۶﴾ وَ قَالَ الۡمَلَاُ مِنۡ قَوۡمِ فِرۡعَوۡنَ اَتَذَرُ مُوۡسٰى وَ قَوۡمَهٗ لِيُفۡسِدُوۡا فِى الۡاَرۡضِ وَ يَذَرَكَ وَ اٰلِهَتَكَ ؕ
قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبۡنَآءَهُمۡ وَنَسۡتَحۡىٖ نِسَآءَهُمۡ ۚ وَاِنَّا فَوۡقَهُمۡ قٰهِرُوۡنَ ﴿۱۲۷﴾

आयत न० 123 से 127

फ़िरऔन (बड़ा घबराया कि कहीं ऐसा न हो सब लोग ही मुसलमान हो जाएं तो एक बात घड़ कर जादूगरों से) **कहने लगा कि हां तुम मूसा** (अलैहिस्सलाम) **पर ईमान लाए हो मेरे इजाज़त देने से पहले ही, यह** (जो कुछ मुक़ाबिला हुआ) **ज़रूर कोई चाल है जो तुमने इस शहर में मिली भगत करके बनाई है ताकि तुम सब** (मिल कर) **इस शहर से वहां के रहने वालों को बाहर निकाल दो** (फिर सब मिल कर यहां हुकूमत करो), **अच्छा तो तुम्हें अभी पता चल जाएगा**(123) (और ज़रूर) **मैं तुम्हारे एक तरफ़ के हाथ और दूसरी तरफ़ के पैर काटूंगा फिर तुम सब को सूली पर लटका दूंगा** (ताकि औरों को सबक़ हो)(124) **उन्होंने जवाब दिया कि** (कुछ परवा नहीं) **हम मर कर** (किसी बुरे ठिकाने तो न जाएंगे बल्कि) **अपने मालिक ही के पास जाएंगे** (जहां पर हर तरह चैन व आराम है सो हमारा नुक़सान ही क्या है)(125) **और तुमने हम में कौन सी बुराई देखी है** (जिस पर इतना हंगामा है) **सिवाए इसके कि हम अपने रब के हुक्मों पर ईमान ले आए जब कि वो हमारे पास आए** (तो यह कोई बुराई की बात नहीं, फिर अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की कि) **या रब हमारे हमें सब्र की हिम्मत दे** (अगर ये सताएं तो भी हम जमे रहें) **और हमें मुसलमान होने की हालत में मौत दीजिए** (कि इन के सताने से घबरा कर कोई बात ईमान के ख़िलाफ़ न हो जाए)(126) **और** (जब मूसा अलैहिस्सलाम का यह बड़ा मोजिज़ा सब के सामने आया और जादूगर और कुछ लोग भी ईमान ले आए तो) **फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने** (फ़िरऔन से) **कहा कि क्या आप मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को और उन की क़ौम** (के लोगों) **को यूंही**

(आज़ाद) **रहने देंगे कि वो मुल्क में फ़साद करते फिरें** (यानी अपनी गिनती बढ़ाएं फिर बाद में बग़ावत का ख़तरा है) **और वो** (यानी मूसा अलैहिस्स्लाम) **आप को और आप के** (ठहराए हुए) **माबूदों को छोड़े रहें** (यानी उन के माबूद होने का इनकार करें सो आप इस का इन्तिज़ाम कीजिए), **फिर फ़िरऔन ने कहा कि हम भी उन लोगों के बेटों को क़त्ल करना शुरू कर दें** (ताकि उन का ज़ोर न बढ़ने पाए) **और** (चूंकि औरतों के बढ़ने से कोई ख़तरा नहीं है फिर हम को अपने काम व ख़िदमत के लिए भी ज़रूरत है इसलिए) **औरतों को ज़िन्दा रहने दें और हम को उन पर हर तरह का ज़ोर** (है करना कोई मुश्किल नहीं) **है**(127)।

नोटः- फ़िरऔन ने गुस्से में आकर बनी इस्राईल के बेटों को क़त्ल करने का हुक्म तो दे दिया मगर हज़रत मूसा और हज़रत हारून अलैहिमुस्सलाम के बारे में उस वक़्त भी उस की ज़बान पर कोई बात न आई वजह यह है कि फ़िरऔन के दिल पर उन का डर बैठ गया था। और सईद बिन जबीर कहते हैं कि ''फ़िरऔन का यह हाल हो गया था कि जब मूसा अलैहिस्सलाम को देखता तो उस का पेशाब निकल जाता था'' और यह अल्लाह तआला का अपने पैग़म्बर को दिया हुआ रौब था।

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَ اصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ۬ يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَ الْعَاقِبَةُ
لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿۱۲۸﴾ قَالُوْۤا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَ
يَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ﴿۱۲۹﴾ وَ لَقَدْ اَخَذْنَاۤ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَ نَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ
لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿۱۳۰﴾ فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ وَ اِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَ مَنْ
مَّعَهٗ ؕ اَلَاۤ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللّٰهِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۳۱﴾ وَ قَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا
بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۳۲﴾ فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَ الْجَرَادَ وَ الْقُمَّلَ وَ الضَّفَادِعَ وَ الدَّمَ اٰيٰتٍ
مُّفَصَّلٰتٍ ۫ فَاسْتَكْبَرُوْا وَ كَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿۱۳۳﴾ وَ لَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا
عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَ لَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۱۳۴﴾ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ
الرِّجْزَ اِلٰۤى اَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ﴿۱۳۵﴾ فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ
كَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ﴿۱۳۶﴾

आयत न० 128 से 136

(उन की बातों की ख़बर जो बनी इस्राईल को पहुंची तो बड़े घबराए और हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम से फ़रियाद की तो) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने अपनी कौम से कहा कि अल्लाह तआ़ला का सहारा रक्खो और सब्र करो** (घबराओ मत) **यह ज़मीन अल्लाह की है, जिस को चाहें मालिक** (और हाकिम) **बनाएं अपने बन्दों में से** (तो कुछ दिनों के लिए फ़िरऔन को दे दी है), **और अख़ीर कामयाबी उन्हीं को होती है जो अल्लाह तआ़ला से डरते हैं** (सो तुम ईमान व परहेज़गारी पर जमे रहो, इन्शाअल्लाह तआ़ला यह हुकूमत तुम ही को मिल जाएगी थोड़े दिनों इन्तिज़ार की ज़रूरत है)(128) **क़ौम के लोग** (दुःख से) **कहने लगे कि** (हज़रत) **हम तो सदा मुसीबत ही में रहे आप के आने से पहले भी** (कि फ़िरऔन बेगार लेता था और बहुत दिनों तक हमारे लड़कों को क़त्ल करता रहा) **और आप के आने के बाद भी** (कि तरह-तरह की तकलीफ़ें पहुंचाई जा रही हैं यहां तक कि अब फिर औलाद के क़त्ल करने की राय ठहरी है), **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा** (घबराओ मत) **बहुत जल्दी अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दुशमन को हलाक कर देंगे और उन की जगह तुम को इस ज़मीन का हाकिम बना देंगे फिर देखेंगे तुम कैसे काम** (करते हो शुक्र और कद्र और ताबेदारी करते हो या नाशुक्री और गुनाह) **करते हो**(129) **और** (जब फ़िरऔन और उस की क़ौम ने इनकार व मुख़ालफ़त पर कमर बान्धी तो) **हम ने** (फ़िरऔन और) **फ़िरऔन वालों को** (इन मुसीबतों में) **पकड़ा क़हत** (यानी अकाल) **में और फलों** (और खेती) **की कम पैदावारी में ताकि वो** (हक़ बात को) **समझ जाएं** (और समझ कर मान लें)(130) **सो** (वो फिर भी न समझे बल्कि यह हालत थी कि) **जब उन पर ख़ुशहाली आजाती तो कहते कि यह तो हमारे लिए होना ही चाहिए था** (यह नहीं कि उस को अल्लाह की नेमत समझ कर शुक्र करते और ताबेदारी करते), **और अगर उन को कोई बदहाली** (जैसे कम पैदावारी) **पेश आ जाती तो मूसा** (अलैहिस्सलाम) **और उन के साथियों की नुहूसत बताते** (कि यह उन की नुहूसत से हुआ यह न हुआ कि उस को अपने बुरे कामों की सज़ा समझ कर तौबा करते), **याद रक्खो कि उन की** (इस) **नुहूसत** (की वजह) **अल्लाह को पता** (है यानी उन के कुफ़्र के काम तो अल्लाह को पता हैं यह नुहूसत उन्हीं कामों की सज़ा) **है लेकिन** (अपनी नासमझी से) **उन में अक्सर लोग** (उस को) **नहीं जानते**(131) **और** (बल्कि ऊपर से) **यह कहते** (कि चाहे) **कैसी ही अनोखी निशानी हमारे सामने लाओ कि उस के वास्ते से हम पर जादू चलाओ जब भी हम तुम्हारी बात नहीं मानेंगे**(132) (जब वो ऐसे बाग़ी हो गये तो) **फिर हम ने उन पर** (दूसरी मुसीबतें भेजी जैसे बारिश का) **तूफ़ान भेजा और** (इससे घबराए

तो मूसा अलैहिस्सलाम से वादा किया कि हम से यह मुसीबत दूर करा दें तो हम ईमान ले आएं जब वो मुसीबत दूर हुई तो फिर कुफ़्र पर जमे रहे तो हम ने उन के खेतों पर) **टिड्डियां** (छोड़ दीं) **और** (अनाज में) **घुन का कीड़ा** (पैदा कर दिया) **और** (फिर) **मेंढ़क** (का अज़ाब भेजा) **और** (उन का पानी) **ख़ून** (हो जाता था और हर मुसीबत पर ताबेदारी का वादा करने के बाद फिर वादे से फिर जाते थे) **ये सब** (मूसा अलैहिस्सलाम के) **खुले मोजिज़े थे, सो** (चाहिए था कि इन मोजिज़ों व अज़ाब को देख कर ढीले पड जाते मगर) **वो** (फिर भी) **घमन्ड** (ही) **करते रहे और वो बड़े मुजरिम लोग** (थे कि इतनी सख़्ती पर भी बाज़ न आते) **थे(133) और जब उन पर कोई अज़ाब आता तो यह कहते ऐ मूसा हमारे लिए अपने रब से इस बात की दुआ़ कर दीजिए जिस का उस ने आप से वादा कर रक्खा है** (यानी बाज़ आजाने पर मुसीबत का दूर कर देना)**, अगर आप इस अज़ाब को हम से हटा दें** (यानी दुआ़ करके हटवा दें) **तो हम ज़रूर आप के कहने से ईमान ले आऐंगे और हम बनी इस्राईल को भी आज़ाद करके आप के साथ जाने देंगे(134) फिर जब** (मूसा अलैहिस्सलाम की बरकत से) **उन से उस अज़ाब को एक ख़ास वक़्त तक कि जब तक उन को पहुंचना ही था हटा लेते तो वो एक दम अपने वादे से फिर जाते** (जैसा ऊपर बयान हुआ)(135) **फिर** (जब हर तरह देख लिया कि वो अपनी शरारत से बाज़ नहीं आते तब) **हम ने उन से** (पूरा) **बदला लिया यानी उन को दरिया में डुबो दिया इस वजह से कि वो हमारी आयतों को झुटलाते थे और उन से बिल्कुल बेपरवाह हो गये** (थे और वादे कर-कर के तोड़ते) **थे(136)**

नोटः- यहां यह भी मालूम हुआ कि हुकूमत देने के बाद अल्लाह तआ़ला यह भी देखते हैं कि वो हाकिम कैसे काम कर रहा है।

وَ اَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِیْنَ كَانُوْا یُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَ مَغَارِبَهَا الَّتِیْ بٰرَكْنَا فِیْهَا ؕ وَ تَمَّتْ كَلِمَتُ
رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ ۙ۬ بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَ دَمَّرْنَا مَا كَانَ یَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَ قَوْمُهٗ وَ مَا كَانُوْا یَعْرِشُوْنَ ﴿۱۳۷﴾ وَ
جٰوَزْنَا بِبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ یَّعْكُفُوْنَ عَلٰۤى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ قَالُوْا یٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَاۤ اِلٰهًا كَمَا
لَهُمْ اٰلِهَةٌ ؕ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ﴿۱۳۸﴾ اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِیْهِ وَ بٰطِلٌ مَّا كَانُوْا یَعْمَلُوْنَ ﴿۱۳۹﴾ قَالَ
اَغَیْرَ اللّٰهِ اَبْغِیْكُمْ اِلٰهًا وَّ هُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِیْنَ ﴿۱۴۰﴾ وَ اِذْ اَنْجَیْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ یَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ
الْعَذَابِ ۚ یُقَتِّلُوْنَ اَبْنَآءَكُمْ وَ یَسْتَحْیُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَ فِیْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِیْمٌ ﴿۱۴۱﴾ ع وَ وٰعَدْنَا مُوْسٰى

ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّ اَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ وَ قَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ
قَوْمِيْ وَ اَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿۱۴۲﴾

आयत न० 137 से 142

और (फ़िरऔन और उस के साथ वालों को डुबोकर) **हम ने उन लोगों को जो कि कमज़ोर समझे जाते थे** (यानी बनी इस्राईल को) **उस ज़मीन के पूरब-पच्छिम** (यानी पूरे मुल्क) **का मालिक बना दिया जिस में हम ने बरकत रक्खी है, और आप के रब का अच्छा वादा बनी इस्राईल के हक़ में उन के सब्र की वजह से पूरा हो गया, और हम ने फ़िरऔन और उस की क़ौम के बने बनाए कारख़ानों को और जो कुछ वो ऊंची-ऊंची इमारतें बनाते थे सब को बर्बाद कर दिया(137) और** (जिस दरिया में फ़िरऔन को डुबोया गया) **हम ने बनी इस्राईल को** (उस) **दरिया से पार उतार दिया फिर** (पार होने के बाद) **वो लोग एक क़ौम से गुज़रे जो अपने कुछ बुतों से लगे बैठे** (थे यानी उन की पूजा पाट कर रहे) **थे, कहने लगे कि ऐ मूसा हमारे लिए भी एक ऐसा ही माबूद बना दो जैसे उन के ये बुत हैं** (ताकि उस को सामने रख कर इबादत करें क्योंकि अल्लाह तआ़ला तो दिखाई नहीं देते)**, आप ने कहा सचमुच तुम लोगों में बड़ी जहालत है(138) ये लोग जिस काम में लगे हैं** (अल्लाह की तरफ़ से भी) **बर्बाद किया जाएगा और उन का यह काम ग़लत है(139)** (और) **कहा क्या अल्लाह के सिवा किसी और को तुम्हारा माबूद बनादूं जबकि उस ने तुम को** (कुछ नेमतों में) **सारी दुनिया वालों पर बड़ाई दी है(140) और** (अल्लाह तआ़ला ने कहा कि) **वो वक़्त याद करो जब हम ने तुम को फ़िरऔन वालों** (के ज़ुल्म) **से बचा लिया जो तुम को बड़ी सख़्त तकलीफ़ें पहुचाते थे कि तुम्हारे बेटों को क़त्ल कर देते थे और तुम्हारी औरतों को** (अपनी बेगार और ख़िदमत के लिए) **ज़िन्दा छोड़ देते थे, और इस** (क़िस्से) **में तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ा भारी इम्तिहान था(141) और** (किताब व शरीअ़त देने के लिए) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **से तीस रातों का वादा लिया** (कि तूर पर आकर ऐतकाफ़ करें तो आप को शरीअत और किताब तौरेत दी जाएगी) **और दस रातें और बढ़ा कर मुद्दत पूरी कर दी गई** (यानी तौरेत देकर उन में दस रातें इबादत के लिए और बढ़ा दीं) **इस तरह उन के रब का** (ठहराया हुआ) **वक़्त** (सब मिल कर) **पूरी चालीस रातें हो गया, और मूसा** (अलैहिस्सलाम तूर पहाड़ पर आने लगे तो चलते वक़्त आप) **ने अपने भाई हारून** (अलैहिस्सलाम) **से कह दिया था कि मेरे बाद इन लोगों की तुम देख भाल करते रहना और** (मेरी तरह) **सुधार करते रहना**

और फ़साद करने वालों की राय पर न चलना(142)।

नोटः- एक हदीस में है कि जो आदमी चालीस दिन सच्ची नीयत के साथ अल्लाह तआ़ला की इबादत करे तो अल्लाह तआ़ला उस के दिल से हिकमत के चशमे जारी कर देते हैं।

(रूहुल बयान)

وَ لَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَ كَلَّمَهٗ رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ؕ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَ لٰكِنِ انْظُرْ اِلَى
الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّ خَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ
اَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۴۳﴾ قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَ
بِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَ كُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿۱۴۴﴾ وَ كَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّ تَفْصِيْلًا
لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّ اْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا بِاَحْسَنِهَا ؕ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ﴿۱۴۵﴾

आयत न० 143 से 145

और जब मूसा (अलैहिस्सलाम) **हमारे वादे** (के वक़्त) **पर आए और उन के रब ने उन से** (बहुत सी महरबानी की) **बातें की तो** (ख़ुशी में देखने का शौक़ पैदा हुआ) **कहने लगे कि या रब मेरे मुझे अपना दीदार करा दीजिए कि मैं आप को देख लूं,** (अल्लाह तआ़ला ने) **कहा कि तुम मुझ को** (दुनिया में) **हरगिज़ नहीं देख सकते** (क्योंकि ये आंखें अल्लाह के जमाल की सहार नहीं कर सकतीं) **लेकिन** (तुम्हारी तसल्ली के लिए ऐसा करते हैं कि) **इस पहाड़ की तरफ़ देखते रहो** (हम इस पर एक झलक डालते हैं) **तो अगर यह अपनी जगह ठहरा रहा तो** (अच्छा) **तुम भी देख सकोगे** (मूसा अलैहिस्सलाम उस की तरफ़ देखने लगे) **बस उन के रब ने जो उस पर तजल्ली की** (किरण डाली) **तो** (तजल्ली ने) **उस** (चट्टान) **का चूरा-चूरा कर दिया और मूसा** (अलैहिस्सलाम) **बेहोश हो कर गिर पड़े, फिर जब होश में आए तो कहने लगे बेशक आप की ज़ात पाक** (और बहुत ऊंची) **है** (ये आंखें उसे देख नहीं सकती) **मैं आप से तौबा करता हूं** (कि ऐसी मांग की) **और** (आप की इस बात पर कि दुनिया में कोई आप को नहीं देख सकता) **मैं सब से पहले यक़ीन करता हूं**(143) (अल्लाह तआ़ला ने) **कहा कि मूसा** (ये ही बहुत है कि) **मैंने** (तुम को) **अपनी** (तरफ़ से) **पैग़म्बरी** (का ओहदा) **दे कर और तुम से बात करके तुम्हें और लोगों पर बड़ाई दी है, तो** (अब) **जो कुछ मैंने तुम को दिया है** (पैग़म्बरी और अल्लाह से बात करना और

तौरेत) **उस को लेलो और शुक्र अदा करो**(144) **और हम ने कुछ तख़्तियों पर हर क़िस्म की** (ज़रूरी) **नसीहत** (और ज़रूरी हुक्मों) **की बातें साफ़-साफ़ उन को लिख कर दीं** (ये ही तख़्तियां तौरेत हैं फिर हुक्म हुआ कि जब ये तख़्तियां हम ने दी हैं) **तो इन पर कोशिश के साथ** (ख़ुद भी) **अ़मल करो और अपनी क़ौम को** (भी) **हुक्म करो कि उन के अच्छे अच्छे हुक्मों पर** (यानी कि सब पर कि सभी अच्छे हैं) **अमल करें, मैं अब बहुत जल्दी तुम लोगों को** (यानी बनी इस्राईल को) **उन हुक्म न मानने वालों का घर दिखाता हूं** (इसमें ख़ुशख़बरी और वादा है कि मिस्र या शाम पर जल्दी ही क़ब्ज़ा हो जाएगा)(145)।

سَاَصۡرِفُ عَنۡ اٰيٰتِىَ الَّذِيۡنَ يَتَكَبَّرُوۡنَ فِى الۡاَرۡضِ بِغَيۡرِ الۡحَقِّ ؕ وَ اِنۡ يَّرَوۡا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤۡمِنُوۡا بِهَا ۚ وَ اِنۡ يَّرَوۡا
سَبِيۡلَ الرُّشۡدِ لَا يَتَّخِذُوۡهُ سَبِيۡلًا ۚ وَ اِنۡ يَّرَوۡا سَبِيۡلَ الۡغَىِّ يَتَّخِذُوۡهُ سَبِيۡلًا ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمۡ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَ كَانُوۡا
عَنۡهَا غٰفِلِيۡنَ ﴿۱۴۶﴾ وَ الَّذِيۡنَ كَذَّبُوۡا بِاٰيٰتِنَا وَ لِقَآءِ الۡاٰخِرَةِ حَبِطَتۡ اَعۡمَالُهُمۡ ؕ هَلۡ يُجۡزَوۡنَ اِلَّا مَا كَانُوۡا
يَعۡمَلُوۡنَ ﴿۱۴۷﴾ وَ اتَّخَذَ قَوۡمُ مُوۡسٰى مِنۡۢ بَعۡدِهٖ مِنۡ حُلِيِّهِمۡ عِجۡلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ اَلَمۡ يَرَوۡا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمۡ وَ
لَا يَهۡدِيۡهِمۡ سَبِيۡلًا ۘ اِتَّخَذُوۡهُ وَ كَانُوۡا ظٰلِمِيۡنَ ﴿۱۴۸﴾ وَ لَمَّا سُقِطَ فِىۡۤ اَيۡدِيۡهِمۡ وَ رَاَوۡا اَنَّهُمۡ قَدۡ ضَلُّوۡا ۙ قَالُوۡا لَئِنۡ
لَّمۡ يَرۡحَمۡنَا رَبُّنَا وَ يَغۡفِرۡ لَنَا لَنَكُوۡنَنَّ مِنَ الۡخٰسِرِيۡنَ ﴿۱۴۹﴾ وَ لَمَّا رَجَعَ مُوۡسٰۤى اِلٰى قَوۡمِهٖ غَضۡبَانَ اَسِفًا ۙ قَالَ
بِئۡسَمَا خَلَفۡتُمُوۡنِىۡ مِنۡۢ بَعۡدِىۡ ۚ اَعَجِلۡتُمۡ اَمۡرَ رَبِّكُمۡ ۚ وَ اَلۡقَى الۡاَلۡوَاحَ وَ اَخَذَ بِرَاۡسِ اَخِيۡهِ يَجُرُّهٗۤ اِلَيۡهِ ؕ قَالَ
ابۡنَ اُمَّ اِنَّ الۡقَوۡمَ اسۡتَضۡعَفُوۡنِىۡ وَ كَادُوۡا يَقۡتُلُوۡنَنِىۡ ۖ فَلَا تُشۡمِتۡ بِىَ الۡاَعۡدَآءَ وَ لَا تَجۡعَلۡنِىۡ مَعَ الۡقَوۡمِ
الظّٰلِمِيۡنَ ﴿۱۵۰﴾ قَالَ رَبِّ اغۡفِرۡ لِىۡ وَ لِاَخِىۡ وَ اَدۡخِلۡنَا فِىۡ رَحۡمَتِكَ ۖ وَ اَنۡتَ اَرۡحَمُ الرّٰحِمِيۡنَ ﴿۱۵۱﴾

आयत न० 146 से 151

मैं ऐसे लोगों (के दिलों) **को अपनी आयतों से फेरे ही रक्खूंगा जो दुनिया में** (हुक्म मानने से) **नाहक़ घमन्ड करते हैं, और** (हुक्म न मानने का उन पर यह असर होगा कि) **अगर सभी** (दुनिया भर की) **निशानियां** (भी) **देख लें तब भी** (हटधर्मी से) **उन पर ईमान न लाएंगे, और हिदायत का रास्ता देखें तो उस को अपना तरीक़ा न बनाएं और अगर गुमराही का रास्ता देख लें तो उस को अपना तरीक़ा बनालें, यह** (इस दर्जा की नाफ़रमानी) **इस वजह से है कि उन्होंने हमारी आयतों को** (घमन्ड की वजह से) **झूटा बताया और उन** (की असलीयत

जानने) **से बेपरवाह रहे(146) और** (आख़रत में यह सज़ा होगी कि) **जिन लोगों ने हमारी आयतों को और क़ियामत के आने को झुटलाया उन के सब काम** (जिन से उन को उम्मीद नफ़े की थी) **बर्बाद हो गये** (और अन्जाम इस बर्बादी का जहन्नम है), **उन को वो ही सज़ा दी जाएगी जो कुछ ये करते थे(147) और** (जब मूसा अलैहिस्सलाम तूर पर तौरेत लेने गये तो) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम** (यानी बनी इस्राईल) **ने उन के** (जाने के) **बाद अपने ज़ेवरों का एक बछड़ा बना लिया** (उस की पूजा करने के लिए) **जो कि** (सिर्फ़) **एक बेजान जिस्म था जिस में एक आवाज़ थी** (और उसमें कोई कमाल न था जिससे किसी समझदार को उस के माबूद होने का शक हो सके), **क्या उन्होंने इतना भी न देखा कि** (उस में आदमी के बराबर भी तो ताक़त नहीं थी कि) **वो उन से बात तक नहीं करता था और न उन को** (दुनिया या दीन का) **कोई रास्ता बताता था** (और ख़ुदा की सी ख़ूबियां तो उसमें क्या होती, बस) **उस** (बछड़े) **को उन्होंने माबूद बना लिया** (और उन्होंने यह) **बड़ा बेढंगा काम किया(148) और जब** (मूसा अलैहिस्सलाम के समझाने पर) **अपने किये पर पछताए और पता चला कि सचमुच वो लोग गुमराही में पड़ गये तो** (पछता कर मुआफ़ी मांगते हुए) **कहने लगे कि अगर हमारा रब हम पर रहम न करे और हमारा** (यह) **गुनाह मुआफ़ न करे तो हम बर्बाद हो जाएंगे(149) और जब मूसा** (अलैहिस्सलाम) **अपनी क़ौम की तरफ़** (तूर से) **वापस आए ग़ुस्से और दुःख में भरे हुए** (क्योंकि उन्हें वही के वास्ते से इस बात का पता चल गया था) **तो** (पहले क़ौम से) **कहा कि तुम ने मेरे** (जाने के) **बाद यह बहुत ग़लत हरकत की, क्या अपने रब के हुक्म** (आने) **से पहले ही तुमने** (ऐसी) **जल्द बाज़ी कर ली** (मैं हुक्म ही लेने गया था उस का इन्तिज़ार तो किया होता), **और** (फिर हज़रत हारून की तरफ़ ध्यान किया और दीनी जोश में) **जल्दी से** (तौरेत की) **तख़्तियां** (तो) **एक तरफ़ रक्खी** (और जल्दी में ऐसे ज़ोर से रक्खी गईं कि देखने वाले को शक हो कि जैसे किसी ने पटक दी हों) **और** (हाथ ख़ाली करके) **अपने भाई** (हारून अलैहिस्सलाम) **का सर** (यानी बाल) **पकड़ कर उन को अपनी तरफ़ घसीटने लगे** (कि तुमने क्यों पूरा इन्तिज़ाम नहीं किया), **हारून** (अलैहिस्सलाम) **ने कहा कि ऐ मेरे मांजाय** (भाई मैंने अपनी कोशिश भर बहुत रोका लेकिन) **उन लोगों ने मुझे कमज़ोर समझा और** (बल्कि नसीहत करने पर) **हो सकता था कि वो मुझ को क़त्ल कर देते तो मुझ पर** (सख़्ती करके) **दुशमनों को मत हंसवाओ और मुझ को** (बरताव से) **इन ज़ालिम लोगों में मत गिनो** (कि उन की सी नाराज़गी मुझ से भी बरतने लगो)(150) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने** (अल्लाह तआला से दुआ की और) **कहा कि या रब मेरे मुझे और मेरे भाई को मुआफ़ कर दीजिए और हम दोनों को**

अपनी (ख़ास) **रहमत में दाख़िल कीजिए और आप सब रहम करने वालों से ज़्यादा रहम करने वाले हैं** (इसलिए हम को दुआ़ क़ुबूल होने की उम्मीद है)(151)।

اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ ذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَ كَذٰلِكَ نَجْزِي
الْمُفْتَرِيْنَ ۝١٥٢ وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ۡ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٥٣ وَ لَمَّا
سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ الْاَلْوَاحَ ۖۚ وَ فِيْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّ رَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ۝١٥٤ وَ
اخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ
قَبْلُ وَ اِيَّايَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ۚ اِنْ هِيَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَ تَهْدِيْ مَنْ
تَشَآءُ ؕ اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ۝١٥٥ وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّ فِي الْاٰخِرَةِ
اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ عَذَابِيْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَ رَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ
يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٥٦ ۚ

आयत न० 152 से 156

(फिर अल्लाह तआ़ला ने उन बछड़ा पूजने वालों के बारे में मूसा अलैहिस्सलाम से कहा कि) **जिन लोगों ने बछड़े की पूजा की है** (अगर अब भी तौबा न करेंगे तो) **उन पर बहुत जल्दी उन के रब की तरफ़ से ग़ज़ब और रूसवाई इस दुनिया की ज़िन्दगी ही में पड़ेगी, और** (कुछ उन ही की ख़ास बात नहीं) **हम** (तो) **झूट घड़ने वालों को ऐसी ही सज़ा दिया करते हैं(152) और जिन लोगों ने गुनाह के काम किये** (जैसे बछड़े की पूजा मगर) **फिर वो उन** (गुनाहों) **के** (करने के) **बाद तौबा कर लें और** (इस कुफ़्र को छोड़ कर) **ईमान ले आएं,** (तो) **तुम्हारा रब इस तौबा के बाद** (उन के) **गुनाह का मुआ़फ़ कर देने वाला** (और उन के हाल पर) **रहमत करने वाला है** (चाहे दुनिया में कुछ सज़ा देकर आख़रत की मुआ़फ़ी और रहमत हो जाए)**(153) और जब** (हारून अलैहिस्सलाम की यह मजबूरी सुन कर) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **का गुस्सा थम गया तो उन तख़्तियों को उठा लिया और उन** (तख़्तियों) **में जो बातें लिखी थी उस में हिदायत और रहमत थी** (यानी शरीअ़त के हुक्म) **उन लोगों के लिए जो अपने रब से डरते** (हैं यानी हुक्मों की पाबन्दी करते) **हैं(154) और** (जब मूसा अलैहिस्सलाम ने तौरेत के हुक्म सुनाए तो उन लोगों ने अपनी आदत के मुवाफ़िक़ उस में शक किया कि हम को कैसे पता चले कि ये अल्लाह तआ़ला के हुक्म हैं हम से

अल्लाह तआ़ला ख़ुद कह दें तो यक़ीन किया जाए मूसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआ़ला से दुआ़ की वहां से हुक्म हुआ इन में के कुछ आदमी चुन कर जिन पर ये ऐतबार करते हों तूर पहाड़ पर ले आओ हम ख़ुद उन से कह देंगे कि ये हमारे हुक्म हैं बस) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **ने सत्तर आदमी अपनी क़ौम में से हमारे** (तय किये हुए) **वक़्त** (पर लाने) **के लिए चुन लिए** (वहां पहुंच कर उन्होंने अल्लाह तआ़ला का कलाम सुना तो उस में भी एक शक की बात निकाली और कहने लगे कि ख़ुदा जाने कौन बोल रहा होगा हम तो जब यक़ीन लाएं कि अल्लाह तआ़ला को अपनी खुली आंखों से देख लें अल्लाह तआ़ला ने इस बेअदबी की सज़ा दी नीचे से सख़्त ज़लज़ला शुरू हुआ ऊपर से ऐसी कड़क बिजली की हुई कि सब वहां ही रह गये) **सो जब उन को ज़लज़ले ने आ पकड़ा तो मूसा** (अलैहिस्सलाम डरे कि बनी इस्राईल शक्की तो हैं ही यह समझेंगे कि कहीं ले जाकर किसी तरह से उन सब को हलाक कर दिया है इस बदनामी से घबरा कर) **कहने लगे या रब मेरे अगर आप चाहते तो इससे पहले ही इन को और मुझ को हलाक कर देते,** (उम्मीद है कि आप मुझ को बदनाम न करेंगे और भला) **कहीं आप हम में के कुछ बेवक़ूफ़ों की हरकत पर सब को हलाक कर देंगे** (बस पता चला कि) **यह क़िस्सा आप की तरफ़ से सिर्फ़ एक इम्तिहान है, ऐसे इम्तिहानों से जिस को आप चाहें गुमराही में डाल दें** (कि अल्लाह तआ़ला की शिकायत और नाशुक्री करने लगे) **और जिस को आप चाहें हिदायत देदें,** (और) **आप ही तो हमारे रखवाले हैं हमें मुआ़फ़ कर दीजिए और हम पर रहम कीजिए और आप सब मुआफ़ी देने वालों से ज़्यादा** (मुआफ़ करने वाले) **हैं** (बस वो लोग सही सलामत उठ खड़े हुए)(155) **और** (इसके साथ आप ने यह भी दुआ़ की कि) **हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दीजिए और** (इसी तरह) **आख़रत में भी** (क्योंकि) **हम** (सच्चे दिल से) **आप ही के दरबार में हाज़िर होते हैं,** (अल्लाह तआ़ला ने मूसा अलैहिस्सलाम की दुआ़ क़ुबूल की और) **कहा कि** (ऐ मूसा) **मैं अपना अज़ाब** (और ग़ज़ब) **तो उसी पर डालता हूं जिस पर चाहता हूं** (यानी हुक्म न मानने वालों में से भी ख़ास-ख़ास लोगों पर अज़ाब डालता हूं) **और मेरी रहमत** (ऐसी आम है कि) **हर चीज़ पर छाई हुई है, तो रहमत उन लोगों के नाम तो** (पूरी तरह) **ज़रूर ही लिक्खूंगा जो कि** (कहना मानते हैं और) **अल्लाह तआ़ला से डरते हैं और ज़कात देते हैं और जो कि हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं**(156)।

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَ الْاِنْجِيْلِ
يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَ يُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَ يَضَعُ عَنْهُمْ

اِصْرَهُمْ وَ الْاَغْلٰلَ الَّتِیْ كَانَتْ عَلَیْهِمْ ؕ فَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ عَزَّرُوْهُ وَ نَصَرُوْهُ وَ اتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِیْۤ اُنْزِلَ مَعَهٗۤ ۙ
اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۵۷﴾

आयत न० 157

जो लोग ऐसे पैग़म्बर नबी उम्मी की ताबेदारी करते हैं जिन को वो अपने पास तौरेत व इन्जील में लिखा हुआ पाते (हैं यानी इन किताबों में आप की साफ़-साफ़ निशानियां मौजूद) **हैं,** (और जिन की ख़ूबी यह भी है कि) **वो उन को नेक कामों का हुक्म देते हैं और बुरी बातों से मना करते हैं और पाक चीज़ों को उन के लिए हलाल बताते हैं** (चाहे वो पहली शरीअ़त में किसी वजह से हराम थी) **और गन्दी चीज़ों को** (पहले की तरह) **हराम बताते हैं और उन लोगों पर** (पहली शरीअ़त में) **जो बोझ और पाबन्दियां थी** (यानी सख़्त और मुश्किल हुक्म जिन का उन को पाबन्द किया हुआ था) **उन को दूर करते** (हैं यानी ऐसे सख़्त हुक्म उन की शरीअ़त में बदल जाते) **हैं, सो जो लोग उस नबी पर ईमान ले आते हैं और उन का साथ देते हैं और उन की मदद करते और उस नूर के पीछे चलते हैं जो उन के साथ भेजा गया है** (यानी क़ुरआन) **ऐसे लोग पूरे कामयाब होने वाले हैं** (कि सदा के अज़ाब से छुटकारा पाएंगे)(157)।

नोटः- उम्मी का मतलब अनपढ़ है यानी जो लिखना पढ़ना न जानता हो आम लोगों के लिए यह कोई कमाल की बात नहीं बल्कि ऐब की बात है मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए उम्मी होना कमाल और ख़ूबी की बात इसलिए है कि उम्मी होते हुए आप की ज़बान से ऐसा कलाम जारी होना आप का ऐसा मोजिज़ा है जिससे बड़े से बड़ा मुख़ालिफ़ भी इनकार नहीं कर सकता।

قُلْ یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اِنِّیْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَیْكُمْ جَمِیْعَا ِۨالَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ یُحْیٖ وَ
یُمِیْتُ ۪ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رَسُوْلِهِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ الَّذِیْ یُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَ كَلِمٰتِهٖ وَ اتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿۱۵۸﴾ وَ مِنْ
قَوْمِ مُوْسٰۤى اُمَّةٌ یَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَ بِهٖ یَعْدِلُوْنَ ﴿۱۵۹﴾

आयत न० 158 से 159

आप कह दीजिए कि ऐ (दुनिया जहान के) **लोगों मैं तुम सब की तरफ़** (उस) **अल्लाह का भेजा हुआ** (पैग़म्बर हूं) **जिस की हुकूमत है सभी आसमानों और ज़मीन में, उस के सिवा कोई इबादत का हक़दार नहीं वो ही ज़िन्दगी देता है वो ही मौत देता है इसलिए अल्लाह पर**

ईमान लाओ और उस के नबी उम्मी पर (भी ईमान लाओ) **जो कि** (ख़ुद भी) **अल्लाह पर और उस के हुक्मों पर ईमान रखते हैं** (यानी उन को तो इतना बड़ा रूतबा होते हुए अल्लाह और उस के सब पैग़म्बरों और किताबों पर ईमान लाने में शर्म नहीं फिर तुम को क्यों इनकार है) **और इन** (पैग़म्बर) **के पीछे चलो ताकि तुम** (सीधे) **रास्ते पर आजाओ**(158) **और** (चाहे कुछ लोगों ने आप की मुख़ालफ़त की लेकिन) **मूसा** (अलैहिस्सलाम) **की क़ौम में एक गिरोह ऐसा भी है जो सच्चे दीन** (यानी इस्लाम) **के मुवाफ़िक़** (लोगों को) **रास्ता दिखाते हैं और उस के मुवाफ़िक़** (अपने और दूसरों के मुआमलों में) **इन्साफ़ भी करते हैं** (जैसा अब्दुल्लाह बिन सलाम और उन के साथी)(159)।

नोटः- यहां मालूम हुआ कि हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैग़म्बरी सभी इन्सानों व जिन्नात के लिए और उनमें भी क़ियामत तक आने वाली नस्लों के लिए आम है दूसरे पैग़म्बरों की तरह किसी ख़ास इलाक़े और ख़ास मुद्दत के लिए नहीं और आप के बाद कोई नबी आने वाला नहीं।

وَ قَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَیْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ؕ وَ اَوْحَیْنَاۤ اِلٰی مُوْسٰۤی اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗۤ اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ
الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَیْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَ ظَلَّلْنَا عَلَیْهِمُ الْغَمَامَ وَ اَنْزَلْنَا
عَلَیْهِمُ الْمَنَّ وَ السَّلْوٰی ؕ كُلُوْا مِنْ طَیِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَ مَا ظَلَمُوْنَا وَ لٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ یَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۰﴾ وَ اِذْ
قِیْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْیَةَ وَ كُلُوْا مِنْهَا حَیْثُ شِئْتُمْ وَ قُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ
خَطِیْٓـٰٔتِكُمْ ؕ سَنَزِیْدُ الْمُحْسِنِیْنَ ﴿۱۶۱﴾ فَبَدَّلَ الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَیْرَ الَّذِیْ قِیْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا عَلَیْهِمْ رِجْزًا
مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا یَظْلِمُوْنَ ﴿۱۶۲﴾ ع

आयत न० 160 से 162

और हम ने (एक इनआम बनी इस्राईल पर यह किया कि उन के सुधार व इन्तिज़ाम के लिए) **उन को बारह ख़ानदानों में बान्ट कर सब का अलग-अलग क़बीला बना** (दिया और हर एक क़बीले पर एक सरदार देख भाल के लिए तय कर) **दिया, और** (एक इनआम यह किया कि) **हम ने मूसा** (अलैहिस्सलाम) **को हुक्म दिया जब कि उन की क़ौम ने उन से पानी मांगा** (और उन्होंने अल्लाह तआला से दुआ की तो हुक्म हुआ) **अपने इस असा को उस पत्थर पर मारो** (उससे पानी निकल आएगा) **बस** (मारने की देर थी) **एक दम उससे बारह धारें फूट निकलीं,** (और बारह ही

ख़ानदान थे बस) **हर हर आदमी ने अपने पानी पीने की जगह पता कर ली, और** (एक इनआ़म यह किया कि) **हम ने उन पर बादल का साया किया और** (एक इनआ़म यह किया कि) **उन को** (ग़ैब के ख़ज़ाने से) **तुरन्जबीन और बुटेरें पहुंचाई,** (और इजाज़त दी कि) **खाओ पाक चीज़ों से जो कि हम ने तुम को दी हैं** (लेकिन इस पर भी उन्होंने नाशुक्री की) **और** (इससे) **उन्होंने हमारा कोई नुक़सान नहीं किया लेकिन अपना ही नुक़सान करते थे** (ये क़िस्से तिया की घाटी के हैं जो सूरत बक़र में आ चुके हैं)**(160) और** (वो वक़्त याद करो) **जब उन को हुक्म दिया गया कि तुम लोग इस शहर में जाकर रहो और खाओ** (उस की चीज़ों में से) **जहां से तुम चाहो और** (यह भी हुक्म दिया गया कि जब अन्दर जाने लगो तो) **ज़बान से यह कहते जाना कि तौबा है** (तौबा है) **और** (लाचारी से) **झुके-झुके दरवाज़े में दाख़िल होना हम तुम्हारी** (पिछली) **ग़लतियां मुआफ़ कर देंगे,** (और) **जो लोग नेक काम करेंगे उन को और ज़्यादा** (सवाब) **भी देंगे(161) सो बदल डाली उन ज़ालिमों ने दूसरी बात उस के सिवा जिस** (के कहने) **का उन को हुक्म दिया गया था इस पर हम ने उन पर आसमान से अज़ाब भेजा इस वजह से कि वो हुक्म न माना करते थे(162)।**

وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِىْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ۘ اِذْ يَعْدُوْنَ فِى السَّبْتِ اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ
سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّ يَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ ۙ لَا تَاْتِيْهِمْ ۛ كَذٰلِكَ ۛ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۳﴾ وَ اِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ
مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمًا ۙ اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ وَ لَعَلَّهُمْ
يَتَّقُوْنَ ﴿۱۶۴﴾ فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖۤ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَ اَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍۭ بَـِٔيْسٍۭ
بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿۱۶۵﴾ فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٕيْنَ ﴿۱۶۶﴾

आयत न० 163 से 166

और आप इन (अपने दौर के यहूदी) **लोगों से उस बस्ती** (वालों) **का हाल पूछिए जो कि दरिया के किनारे आबाद थे** (उसमें वो यहूदी आबाद थे जिन को हफ़्ते के दिन शिकार करना मना था)**, जब कि वो हफ़्ते के बारे में** (शरीअ़त की) **हद से निकल रहे थे जब कि उन के हफ़्ते के दिन तो उन** (के दरिया) **की मच्छलियां** (पानी से उच्छल उच्छल कर) **सामने आती थीं, और जब हफ़्ते** (यानी बार) **का दिन न होता तो उन के सामने न आती थी** (बल्कि वहां से कहीं दूर चली जाती थी और वजह उस की यह थी कि) **इस तरह हम उन को आज़माते थे** (कि कौन हुक्म

मानता है कौन नहीं मानता और यह आज़माना) **इस वजह से** (था) **कि वो** (पहले से) **हुक्म न माना करते थे(163) और** (उस वक़्त का हाल पूछिए) **जब कि उन में से एक गिरोह ने** (जो कि उन को नसीहत करते-करते नाउम्मीद हो गये तो दूसरे साथियों से) **यह कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत किये जाते हो जिन** (से मानने की उम्मीद नहीं बल्कि उन) **को अल्लाह तआ़ला हलाक करने वाले हैं या उन को** (कोई दूसरी तरह की) **सख़्त सज़ा देने वाले हैं** (यानी ऐसों पर क्यों मेहनत करते हो)**, उन्होंने जवाब दिया कि तुम्हारे** (और अपने) **रब के सामने ज़िम्मेदारी पूरी करने के लिए** (उन को नसीहत करते हैं) **और इसलिए कि शायद डर जाएं** (और अ़मल करने लगें)**(164) सो जब वो उस बात को भुला बैठे जो उन को नसीहत की गई थी** (यानी न माने) **तो हमने उन लोगों को तो** (अज़ाब से) **बचा लिया जो बुरे काम से मना किया करते थे और उन लोगों को जो कि गुनाह करते थे** (उन के हुक्म न मानने की वजह से) **एक सख़्त अज़ाब में पकड़ लिया(165) फिर जब वो उस काम में जिससे उन को मना किया गया था हद से निकल गये तो हम ने उन को कह दिया कि तुम बन्दर ज़लील बन जाओ(166)।**

नोटः- उन लोगों के लिए हफ़्ता (बार) के दिन शिकार को मना किया गया था कि वो इबादत का दिन था उन्होंने यह चाल चली कि हफ़्ते के दिन मच्छली पकड़ लेते और दूसरे दिनों में खाते और अपनी तरफ़ से इस सूरत को जाइज़ कर लिया इस चालाकी पर अज़ाब आया कि बन्दर बना दिये गये।

وَ اِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِؕ اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ۖۚ وَ
اِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱۶۷﴾ وَ قَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا ۚ مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَ مِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ۫ وَ بَلَوْنٰهُمْ
بِالْحَسَنٰتِ وَ السَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۶۸﴾ فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا
الْاَدْنٰى وَ يَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَ اِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ اَنْ
لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ وَ دَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

आयत न० 167 से 169

और (वो वक़्त याद करना चाहिए कि) **जब आप के रब ने** (बनी इस्राईल के पैग़म्बरों के वास्ते से) **यह बात बता दी थी कि वो इन** (यहूदियों) **पर** (उन की नाफ़रमानियों की सज़ा में)

क़ियामत (के नज़दीक ज़माने) **तक ऐसे** (किसी न किसी) **आदमी को हावी रक्खेगा जो उन को बुरी-बुरी तकलीफ़ें पहुंचाएगा** (जैसा कि होता रहा है)**, बेशक आप का रब** (जब चाहे) **जल्दी ही सज़ा दे देता है, और बेशक वो** (अगर तौबा की जाए तो) **बड़ा मुआफ़ करने वाला** (और) **बड़ी रहमत वाला** (भी) **है**(167) **और हम ने दुनिया में उन को अलग-अलग गिरोह में बान्ट दिया** (और) **कुछ उन में नेक** (भी) **थे और कुछ उनमें दूसरी तरह के** (यानी बुरे) **थे, और हम उन को ख़ुशहालियों** (यानी सहत व मालदारी) **और बदहालियों** (यानी बीमारी व ग़रीबी) **से आज़माते रहे कि शायद** (इसी से) **बाज़ आजाएं**(168) **फिर उन** (बड़ों) **के बाद ऐसे लोग उन के वारिस हुए कि किताब** (यानी तौरेत) **को** (तो) **उन से सीखा** (लेकिन इस के साथ ही हराम खाने वाले ऐसे हैं कि किताब के हुक्मों के बदले में) **इस ज़लील दुनिया का साज़ो सामान** (रिश्वत में अगर मिले तो बेझिजक उस को) **ले लेते हैं** (और उस गुनाह को छोटा समझ कर) **कहते हैं कि हमारी ज़रूर बख़्शिश हो जाएगी** (क्योंकि हम अल्लाह के प्यारे हैं)**, हालांकि अगर उन के पास** (फिर) **वैसा ही** (दीन बेंचने के बदले) **माल आने लगे तो** (वैसे ही बेझिझक फिर) **उस को ले लेते हैं, क्या उन से उस किताब में इस बात का एहद नहीं लिया गया था कि अल्लाह के बारे में सिवाए सच के कोई और बात न कहें** (यानी आसमानी किताब को मानने का मतलब यह है कि उस की सब बातों को मानें) **और उन्होंने उस किताब में जो कुछ** (लिखा) **था उस को पढ़** (भी) **लिया, और** (उन्होंने यह काम दुनिया के लिए किया मगर) **आख़रत वाला घर उन लोगों के लिए** (इस दुनिया से) **अच्छा है जो** (बुरे अक़ीदों और बुरे कामों से) **परहेज़ रखते हैं, फिर क्या** (ऐ यहूदियों) **तुम** (इस बात को) **नहीं समझते**(169)।

नोटः- यहूदियों के मुल्क इस्राईल में आबाद होने से किसी को शक न होना चाहिए कि उन को तो हुकूमत हासिल है क्योंकि उस हुकूमत की हैसियत इससे ज़्यादा कुछ नहीं कि वो अमेरिका और योरूप की इस्लाम दुशमनी में बनाई हुई एक छावनी है जिस वक़्त ये मुल्क इसकी मदद से अपना हाथ खींच लें उसी दिन इस्राईल का वजूद इस दुनिया से ख़त्म हो सकता है।

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿۱۷۰﴾ وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ
كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْۤا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَاۤ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿۱۷۱﴾

आयत न० 170 से 171

और (उनमें से) **जो लोग किताब** (यानी तौरेत) **के** (हुक्मों के) **पाबन्द हैं** (जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाने का भी हुक्म है बस पाबन्दी ये ही है कि मुसलमान हो गये) **और** (अक़ीदों के साथ नेक कामों के भी पाबन्द हैं इसलिए) **नमाज़ की पाबन्दी करते हैं, हम ऐसे लोगों का जो अपना** (इस तरह) **सुधार करें सवाब बर्बाद न करेंगे**(170) **और** (वो वक़्त याद करो) **जब हम ने पहाड़ को उठा कर छत की तरह उन** (बनी इस्राईल) **के ऊपर लटका दिया और उन को लगने लगा कि अब उन पर गिरने ही वाला है,** (और उस वक़्त) **कहा कि जल्दी कुबूल करो जो** (किताब) **हम ने तुम को दी है** (यानी तौरेत और) **मज़बूती के साथ** (लेलो) **और याद रक्खो जो हुक्म इस** (किताब) **में हैं जिससे उम्मीद है कि तुम नेक बन जाओ**(171)।

नोटः- जब बनी इस्राईल के किताबे शरीअत मांगने पर तौरेत दी गई तो उस के कुछ हुक्मों को अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ देख कर इनकार कर बैठे तो उस को मनवाने के लिए तूर पहाड़ को उठा कर उन के ऊपर लटका दिया कि मानो नहीं तो यह ऊपर गिराया तब मौत को सामने देख कर सब सजदे में गिर गये।

وَ اِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَ اَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى
ۚ شَهِدْنَا ۚ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ﴿۱۷۲﴾ اَوْ تَقُوْلُوْٓا اِنَّمَآ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ وَ كُنَّا
ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿۱۷۳﴾ وَ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۱۷۴﴾ وَاتْلُ
عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿۱۷۵﴾ وَ لَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ
بِهَا وَ لٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى الْاَرْضِ وَ اتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ
يَلْهَثْ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿۱۷۶﴾ سَآءَ مَثَلًا
اِلْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَ اَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ﴿۱۷۷﴾

आयत न० 172 से 177

और (इन को वो वक़्त याद दिलाओ) **जब कि आप के रब ने** (रूहों के घर में आदम अलैहिस्सलाम की पीठ से तो ख़ुद उन की औलाद को और) **आदम की औलाद की पीठ से उन की**

औलाद को निकाला और (उन को समझ देकर) **उन से उन्हीं के बारे में इक़रार लिया कि क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं, सब ने** (असल बात को समझ कर) **जवाब दिया कि क्यों नहीं** (बेशक आप हमारे रब हैं) **हम सब इस बात की गवाही देते हैं,** (और यह सब इक़रार और गवाही इसलिए हुआ कि) **ताकि तुम** (में से वो) **लोग** (जो) **क़ियामत के दिन** (तौहीद के इनकार और शिर्क पर सज़ा पाएं) **यह न कहने लगें कि हम तो इस बात से अन्जान थे**(172) **या यह न कहने लगो कि** (असल) **शिर्क तो हमारे बड़ों ने किया था और हम तो उन के बाद उन की नस्ल में हुए** (और हम तो उन्हीं के तरीक़े पर चले इसलिए हम बेक़सूर हैं), **सो क्या उन ग़लत राह** (निकालने) **वालों के काम पर आप हम को हलाक कर देंगे** (तो अब यह मजबूरी बताने की गुन्जाइश नहीं रही)(173) **और** (यह भी कहा गया था कि पैग़म्बरों के वास्ते से यह वादा याद दिलाया जाएगा जैसा कि ऐसा ही हुआ भी तो) **इसी तरह हम** (अपनी) **आयतों को साफ़-साफ़ बयान करते हैं ताकि** (शिर्क और गुनाहों से) **वो** (लोग) **बाज़ आजाएं**(174) **और इन लोगों को** (सबक़ देने के लिए) **उस आदमी का हाल पढ़ कर सुनाइये कि उस को हम ने अपनी आयतें दीं** (यानी हुक्मों का इल्म दिया) **फिर वो उन** (आयतों) **को बिल्कुल ही छोड़ निकला फिर शैतान उस के पीछे लग गया सो वो गुमराह लोगों में दाख़िल हो गया**(175) **और अगर हम चाहते तो इन आयतों** (पर अ़मल करने) **की वजह से उस का रूतबा ऊंचा कर देते लेकिन वो तो दुनिया की तरफ़ झुक गया और** (इस झुकाव की वजह से) **अपनी चाहतों के पीछे चलने लगा** (और आयतों और हुक्मों पर अमल छोड़ दिया) **इसलिए उस की हालत कुत्ते की सी हो गई कि अगर तुम उस पर हमला करो** (और मार कर निकाल दो) **तब भी हांपता है या उस को** (उस की हालत पर) **छोड़ दो तब भी हांपता है** (किसी हालत में उस को आराम नहीं), **ये ही हालत उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया, सो आप इस हालत को बयान कर दीजिए शायद वो लोग** (इस को सुन कर) **कुछ सोचें**(176) (असलीयत में) **उन लोगों की हालत भी बुरी हालत है जो हमारी आयतों को झुटलाते हैं और** (इस झुटलाने से) **वो अपना** (ही) **नुक़सान करते हैं**(177)

नोटः- इस क़िस्से से पता चला कि किसी को अपने इल्म व इबादत पर नाज़ नहीं करना चाहिए हालात बदलते और बिगड़ते हुए देर नहीं लगती कुरआन करीम में तो उस आदमी का नाम नहीं लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने उस का नाम बलअम बिन बाऊरा लिखा है और उस का पूरा क़िस्सा भी लिखा है यह हज़रत मूसा के ज़माने में हुआ है। बड़ा आ़लिम और इबादत गुज़ार था। लालच में पड़ गया अन्जाम ख़राब हुआ।

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝١٧٨ وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ
الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ۫ وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ
بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝١٧٩ وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪ وَ
ذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٨٠

आयत न० 178 से 180

जिस को अल्लाह तआ़ला हिदायत करता है सो हिदायत पाने वाला वो ही होता है, और जिस को गुमराह कर दे सो ऐसे ही लोग (सदा के) **नुक़सान में पड़ जाते हैं** (फिर उन से हिदायत की उम्मीद करना और हिदायत न होने से दुखी होना बेकार है)(178) **और** (जब वो लोग अपनी समझ से काम ही नहीं लेते तो हिदायत कहां से हो, सो उन के नसीब में तो दोज़ख़ ही है जैसा कि) **हम ने ऐसे बहुत से जिन्नात और इन्सान दोज़ख़** (ही में रहने) **के लिए पैदा किये हैं जिन के** (नाम को तो) **दिल** (हैं मगर) **ऐसे हैं जिन से** (हक़ बात को) **नहीं समझते** (क्योंकि इस का इरादा नहीं करते)**, और जिन के** (नाम को तो) **आंखें** (हैं मगर) **ऐसी हैं जिन से** (सबक़ लेने की नज़र से किसी चीज़ को) **नहीं देखते, और जिन के** (नाम को तो) **कान** (हैं मगर) **ऐसे हैं जिन से** (ध्यान लगा कर हक़ बात को) **नहीं सुनते,** (बस) **ये लोग** (आख़रत की तरफ़ से बेपरवा होने में) **जानवरों की तरह हैं बल्कि** (जानवर तो शरीअत के हुक्मों के पाबन्द नहीं मगर इन्सानों को तो अपने कामों का हिसाब देना है इसलिए) **ये लोग** (इन जानवरों से भी) **ज़्यादा भटके हुए हैं,** (क्योंकि) **ये लोग** (ध्यान दिलाने के बावजूद आख़रत को) **भूले हुए हैं**(179) **और अच्छे-अच्छे** (ख़ास) **नाम अल्लाह ही के लिए हैं सो उन नामों से अल्लाह ही को पुकारा करो, और** (दूसरों को इन नामों से मत पुकारो बल्कि) **ऐसे लोगों से वास्ता भी न रक्खो जो उस के** (इन) **नामों में टेढ़ा रास्ता अपनाते** (हैं इस तरह से कि दूसरों को इन नामों से याद करते) **हैं, उन लोगों को उन के किये की सज़ा ज़रूर मिलेगी**(180)।

नोटः- अल्लाह को पुकारना चाहे ज़िक्र व तस्बीह के तौर पर हो या दुआ़ मांगने के लिए अच्छे-अच्छे नामों के साथ होना चाहिए जो क़ुरआन व हदीस में बताए गये हैं अपनी तरफ़ से कोई नाम घड़ना नहीं है दूसरी बात जो नाम अल्लाह के लिए हैं उन्हें दूसरों के लिए नहीं बोलना चाहिए और न ही किसी दूसरे से दुआ मांगना चाहिए।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٨١﴾ وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا
يَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٢﴾ وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۚ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ﴿١٨٣﴾ اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ۜ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا
نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٨٤﴾ اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ
قَدِ اقْتَرَبَ اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٨٥﴾

आयत न० 181 से 185

और जिन को हम ने पैदा किया उन (जिन्नात व इन्सानों) **में** (सब भटके हुए नहीं बल्कि) **एक गिरोह** (उन में) **ऐसा भी है जो लोगों को** (दीने) **हक़ का रास्ता दिखाते हैं और उसी** (दीने हक़ यानी इस्लाम) **के मुवाफ़िक़** (अपने और दूसरों के मुआमलों में) **इन्साफ़ भी करते हैं**(181) **और जो लोग हमारी आयतों को झुटलाते हैं हम उन को धीरे-धीरे** (जहन्नम की तरफ़) **लिए जा रहे हैं इस तरह कि उन को पता भी नहीं**(182) **और मैं** (दुनिया के अज़ाब से) **उन को ढील देता हूं बेशक मेरा दांव बहुत पक्का है**(183) **क्या उन लोगों ने इस बात को नहीं सोचा कि उन का जिन से वास्ता है** (यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **वो ज़रा भी दीवाने नहीं, वो तो सिर्फ़ एक साफ़-साफ़** (अज़ाब से) **डराने वाले हैं** (जो कि पैग़म्बर का असली काम होता है)(184) **क्या उन लोगों ने नहीं सोचा कि आसमानों और ज़मीन की दुनिया में और** (इसी तरह) **दूसरी चीज़ों में जो अल्लाह तआला ने पैदा की हैं** (ताकि उन को तौहीद की जानकारी हो जातीं) **और इस बारे में** (भी नहीं सोचा) **कि हो सकता है कि उन की मौत नज़दीक ही आ पहुंची हो** (ताकि अज़ाब के डर से उससे बचने की फ़िक्र करते और जब कुरआन जैसे कलाम से उन पर असर नहीं होता तो) **फिर कुरआन के बाद कौन सी बात पर ये लोग ईमान लाएंगे**(185)।

नोटः- एक हदीस में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस आयत में जिस उम्मत का ज़िक्र है जो अपने सब झगड़ों के फ़ैसले हक़ व इन्साफ़ यानी ख़ुदाइ क़ानून के हिसाब से करेंगे और लेने देने के सभी मुआमलों में हक़ व इन्साफ़ को सामने रक्खेंगे वो मेरी उम्मत के लोग हैं। (इमामे तफ़सीर इब्ने जरीर)

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ۭ وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ﴿١٨٦﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ۭ
قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ۚ لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ اِلَّا هُوَ ۘ ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ لَا تَاْتِيْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ۭ

يَسْـَٔلُوْنَكَ كَاَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ وَ لٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۱۸۷﴾ قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ
لِنَفْسِیْ نَفْعًا وَّ لَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَ لَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَیْبَ لَا سْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَیْرِ ۛۚ وَ مَا مَسَّنِیَ السُّوْٓءُ ۛۚ
اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِیْرٌ وَّ بَشِیْرٌ لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ﴿۱۸۸﴾ هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا
لِیَسْكُنَ اِلَیْهَا ۚ فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِیْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ۚ فَلَمَّاۤ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَىِٕنْ اٰتَیْتَنَا
صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِیْنَ ﴿۱۸۹﴾ فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِیْمَاۤ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا
یُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹۰﴾ اَیُشْرِكُوْنَ مَا لَا یَخْلُقُ شَیْـًٔا وَّ هُمْ یُخْلَقُوْنَ ﴿۱۹۱﴾ۖ وَ لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّ لَاۤ اَنْفُسَهُمْ
یَنْصُرُوْنَ ﴿۱۹۲﴾ وَ اِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَى الْهُدٰى لَا یَتَّبِعُوْكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَیْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ﴿۱۹۳﴾

आयत न० 186 से 193

जिस को अल्लाह तआ़ला गुमराह करे उस को कोई राह पर नहीं ला सकता (फिर ग़म करना बेकार है), **और अल्लाह तआ़ला उन को गुमराही में भटकते हुए छोड़ देता है** (ताकि एक बार ही सज़ा दे)(186) **लोग आप से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वो कब आएगी, आप कह दीजिए कि उस का** (यह) **इल्म** (कि कब आएगी) **सिर्फ़ मेरे रब ही के पास है** (दूसरे को इस की ख़बर नहीं), **उसके वक़्त पर वो ही उस को खोल कर दिखाएगा कोई और नहीं** (और वो दिखाना यह होगा कि उस को बरपा कर देगा उस वक़्त सब को पूरी ख़बर हो जाएगी), **वो आसमानों और ज़मीन में बड़ा भारी हादिसा होगा,** (इसलिए) **वो तुम पर अचानक** (अन्जाने में) **आ पड़ेगी, वो आप से इस तरह पूछते हैं जैसे आप उस की पूरी छान बीन कर चुके हैं** (और आप को उस की पूरी जानकारी हो गई है), **आप कह दीजिए कि उस का इल्म ख़ास अल्लाह ही के पास है लेकिन ज़्यादातर लोग** (इस बात को) **नहीं जानते** (कि कुछ बातें अल्लाह के इल्मे ग़ैब के ख़ज़ाने में ऐसी है जिन की ख़बर पैग़म्बरों को भी नहीं दी गई)(187) **आप कह दीजिए कि अपने लिए भी कोई नफ़ा** (उठा लेना) **या नुक़सान** (से बच जाना) **मेरे बस में नहीं मगर जो अल्लाह ने चाहा हो, और अगर मैं ग़ैब की बातें जानता होता तो मैं** (अपने लिए) **बहुत सी नफ़े की चीज़ें जमा कर लेता और कोई नुक़सान ही मुझ को न पहुंचता** (क्योंकि ग़ैब के इल्म से नफ़े व नुक़सान की चीज़ों का पता चल जाता), **मैं तो सिर्फ़** (शरीअ़त के हुक्म बता कर सवाब की) **ख़ुशख़बरी देने वाला और** (अज़ाब से) **डराने वाला हूं उन लोगों को जो ईमान रखते हैं** (188) **वो अल्लाह ऐसा** (क़ुदरत वाला और नेमतें देने वाला) **है जिस ने तुम को एक जान**

(यानी आदम अलैहिस्सलाम) **से पैदा किया और उसी से उस का जोड़ा बनाया** (यानी उन की बीवी हव्वा को पैदा किया) **ताकि वो उस अपने जोड़े से आराम पाये** (बस जब वो ही पैदा करने वाला भी है और अहसान करने वाला भी तो इबादत उसी का हक़ है), **फिर** (आगे उन की औलाद बढ़ी और उनमें भी मियां बीवी हुए लेकिन उनमें कुछ ऐसे हुए कि) **जब मियां ने बीवी से मिलाप किया तो उस को पेट में बच्चा रह गया** (जो शुरू में) **हल्का सा** (रहा) **सो वो उस को** (पेट में) **लिए हुए** (आज़ादी से) **चलती फिरती रही, फिर जब वो** (उस बच्चे के बढ़ जाने से) **बोझल हो गई** (और दोनों मियां बीवी को यक़ीन हो गया कि पेट में बच्चा है) **तो** (उस वक़्त उन को तरह-तरह के शक और वहम होने लगे इसलिए) **दोनों** (मियां बीवी) **अल्लाह से जो कि उन का मालिक है दुआ करने लगे कि अगर आपने हम को सही सालिम औलाद देदी तो हम ज़रूर शुक्र अदा करेंगे** (जैसा कि आदत है कि लोग मुसीबत के वक़्त अल्लाह से बड़े वादे करते हैं)(189) **सो जब अल्लाह तआ़ला ने उन दोनों को सही सालिम औलाद देदी तो अल्लाह की दी हुई चीज़ में वो दोनों अल्लाह के साझी ठहराने** (लगे यानी यह ऐतक़ाद करने लगे कि यह औलाद उस ज़िन्दा या मुर्दा बुज़ुर्ग ने दी है और शिर्क के काम करने) **लगे, सो अल्लाह तआ़ला पाक है उन के शिर्क से**(190) **क्या** (अल्लाह तआ़ला के साथ) **ऐसों को साझी ठहराते हैं जो किसी चीज़ को न बना सके और** (बल्कि) **वो ख़ुद ही बनाए जाते** (हैं जैसा कि देखा जाता है कि बुतों को पूजने वाले ख़ुद ही उन को बनाते) **हैं**(191) **और** (किसी चीज़ का बनाना तो बड़ी बात है) **वो** (तो ऐसे मजबूर हैं कि उस से आसान काम भी नहीं कर सकते जैसे) **उन को किसी क़िस्म की मदद** (भी) **नहीं दे सकते और** (इससे भी बढ़ कर यह है कि) **वो ख़ुद अपनी मदद भी नहीं कर सकते** (अगर कोई हादिसा उन पर पड़ जाए जैसे कोई आदमी उन को तोड़ने फोड़ने लगे)(192) **और अगर तुम उन को कोई बात बताने को पुकारो तो तुम्हारे कहने पर न चलें,** (बल्कि) **दोनों बातें बराबर हैं चाहे तुम उन को पुकारो या चुप रहो** (तो जब वो सुन भी नहीं सकते जो सब से आसान है तो और कोई काम तो क्या करेंगे)(193)।

नोटः- ऊपर आयत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया गया है कि आप इस का ऐलान कर दें कि मैं अपनी जान के लिए भी नफ़े नुक़सान का मालिक नहीं दूसरों के नफ़े नुक़सान का तो क्या ज़िक्र है। इसी तरह यह भी ऐलान कर दें कि मैं आलिमुल ग़ैब नहीं हूं कि हर चीज़ का इल्म होना मेरे लिए ज़रूरी हो।

إِنَّ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ فَادْعُوهُمْ فَلْيَسْتَجِيبُوا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٩٤﴾ أَلَهُمْ
أَرْجُلٌ يَمْشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَبْطِشُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُبْصِرُونَ بِهَا ۖ أَمْ لَهُمْ آذَانٌ
يَسْمَعُونَ بِهَا ۗ قُلِ ادْعُوا شُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ كِيدُونِ فَلَا تُنْظِرُونِ ﴿١٩٥﴾ إِنَّ وَلِيِّيَ اللَّهُ الَّذِي نَزَّلَ الْكِتَابَ ۖ وَهُوَ
يَتَوَلَّى الصَّالِحِينَ ﴿١٩٦﴾ وَالَّذِينَ تَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَكُمْ وَلَا أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُونَ ﴿١٩٧﴾ وَإِنْ
تَدْعُوهُمْ إِلَى الْهُدَىٰ لَا يَسْمَعُوا ۖ وَتَرَاهُمْ يَنْظُرُونَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ﴿١٩٨﴾

आयत न० 194 से 198

यक़ीन जानो कि अल्लाह को छोड़ कर जिन की तुम इबादत करते हो वो भी तुम ही जैसे (अल्लाह के) **बन्दे हैं** (यानी तुम से बढ़ कर नहीं चाहे घटे हुए हों) **सो** (हम तो तुम को सच्चा जब जानें कि) **तुम** (तो) **उन को पुकारो** (और) **फिर उन को चाहिए कि तुम्हारा कहना कर दें अगर तुम** (उन के ख़ुदा होने के ऐतक़ाद में) **सच्चे हो(194)** (और वो बेचारे तुम्हारा कहना तो क्या करेंगे कहना मानने के सामान तक उन को नसीब नहीं देख लो) **क्या उन के पांव हैं जिन से वो चलते हों, या उन के हाथ हैं जिन से किसी चीज़ को थाम सकें, या उन की आंखें हैं जिन से वो देखते हों, या उन के कान हैं जिन से वो सुनते हों,** (और) **आप** (यह भी) **कह दीजिए कि** (जिस तरह वो अपने मानने वालों को नफ़ा पहुंचाने से लाचार हैं इसी तरह अपने दुशमनों को नुक़सान भी नहीं पहुंचा सकते और अगर तुम समझते हो कि वो मुझको नुक़सान पहुंचा सकते हैं तो) **तुम** (अपना अरमान निकाल लो और) **अपने सब देवताओं को बुलालो** (जिन्हें तुम ने अल्लाह का साझी बना रक्खा है) **फिर** (सब मिल कर) **मुझे नुक़सान पहुंचाने की कोशिश करो फिर मुझ को ज़रा भी मोहलत न दो** (देखूं क्या होता है)**(195) बेशक मेरा मददगार अल्लाह तआ़ला है जिस** (के मददगार और दोस्त होने का खुला सबूत यह है कि उस) **ने** (मुझ पर) **यह** (मुबारक) **किताब उतारी, और वो नेक बन्दों की मदद किया करता** (है तो पैग़म्बर तो उन नेक बन्दों में मदद के पहले हक़दार हैं और मैं पैग़म्बर हूं तो मेरा भी ज़रूर मददगार होगा फिर डर किस बात का) **है(196) और तुम जिन लोगों की अल्लाह को छोड़ कर इबादत करते हो वो** (तुम्हारे दुशमन के मुक़ाबिले में) **तुम्हारी कुछ मदद नहीं कर सकते और न** (अपने दुशमन के मुक़ाबिले में) **अपनी मदद कर सकते हैं(197) और** (मदद करना तो बड़ी बात है) **उन को** (तो) **अगर कोई बात बताने को पुकारो तो उस को** (भी) **तो न सुनें, और** (उन की तस्वीर में जो आंखे बना दी जाती हैं वो बस

नाम ही को होती हैं काम की नहीं जैसा कि) **उन** (बुतों) **को आप देखते हैं कि जैसा वो आप को देख रहे हैं और वो** (सच में) **कुछ भी नहीं देखते** (क्योंकि असलीयत में तो वो आंखें नहीं बस ऐसे लाचार का क्या डरावा दिखाते हो)(198)।

नोटः- ऊपर बताया गया कि अललाह हिमायती व मददगार है नेक लोगों का और नेक लोगों में नबियों से लेकर आम नेक मुसलमानों तक दाख़िल हैं।

خُذِ الْعَفْوَ وَ اْمُرْ بِالْعُرْفِ وَ اَعْرِضْ عَنِ الْجٰهِلِیْنَ ۝۱۹۹ وَ اِمَّا یَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّیْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ
اِنَّهٗ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۝۲۰۰ اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّهُمْ طٰٓىِٕفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَكَّرُوْا فَاِذَاهُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۝۲۰۱ وَ
اِخْوَانُهُمْ یَمُدُّوْنَهُمْ فِی الْغَیِّ ثُمَّ لَا یُقْصِرُوْنَ ۝۲۰۲

आयत न० 199 से 202

(और लोगों की ग़लतियों को) **मुआफ़ कर दिया कीजिए और** (लोगों को) **नेकी की नसीहत कीजिए और जाहिलों की तरफ़ ध्यान न कीजिए(199) और अगर** (उन की जहालत पर) **आप को कोई वसवसा शैतान की तरफ़ से** (गुस्से का) **आने लगे तो** (ऐसी हालत में एक दम) **अल्लाह की पनाह मांग लिया कीजिए, बेशक वो ख़ूब सुनने वाला ख़ूब जानने वाला है(200) बेशक जो लोग अल्लाह से डरने वाले हैं जब उन को कोई वसवसा शैतान की तरफ़ से** (गुस्से का या किसी और बात का) **आ जाता है तो वो** (एक दम अल्लाह की) **याद में लग जाते हैं** (जैसे पनाह मांगना, दुआ करना अल्लाह की बड़ाई और सवाब व अज़ाब को याद करना) **सो अचानक उन की आंखें खुल जाती हैं** (और असलीयत उन को पता चल जाती है)(201) **और** (इस के उलट) **जो शैतानों के कहने में हैं वो** (शैतान) **उन को गुमराही में खींचे चले जाते हैं बस वो** (शैतान का कहना मानने वाले गुमराही से) **बाज नहीं आते** (इसलिए उन का ग़म करना बेकार है)(202)।

नोटः- गुस्से की हालत में ''अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम'' पढ़ने से गुस्सा ढल जाता है।

وَ اِذَا لَمْ تَاْتِهِمْ بِاٰیَةٍ قَالُوْا لَوْ لَا اجْتَبَیْتَهَا ؕ قُلْ اِنَّمَاۤ اَتَّبِعُ مَا یُوْحٰۤى اِلَیَّ مِنْ رَّبِّیْ ۚ هٰذَا بَصَآىِٕرُ مِنْ رَّبِّكُمْ وَ

هُدًى وَّ رَحۡمَةٌ لِّقَوۡمٍ يُّؤۡمِنُوۡنَ ۝ وَ اِذَا قُرِئَ الۡقُرۡاٰنُ فَاسۡتَمِعُوۡا لَهٗ وَ اَنۡصِتُوۡا لَعَلَّكُمۡ تُرۡحَمُوۡنَ ۝ وَ اذۡكُرۡ
رَّبَّكَ فِىۡ نَفۡسِكَ تَضَرُّعًا وَّ خِيۡفَةً وَّ دُوۡنَ الۡجَهۡرِ مِنَ الۡقَوۡلِ بِالۡغُدُوِّ وَ الۡاٰصَالِ وَ لَا تَكُنۡ مِّنَ الۡغٰفِلِيۡنَ ۝
اِنَّ الَّذِيۡنَ عِنۡدَ رَبِّكَ لَا يَسۡتَكۡبِرُوۡنَ عَنۡ عِبَادَتِهٖ وَ يُسَبِّحُوۡنَهٗ وَ لَهٗ يَسۡجُدُوۡنَ ۝

आयत न० 203 से 206

और जब आप (उन के मुंहमांगे मोजिज़ों में से) **कोई मोजिज़ा उन को नहीं दिखाते** (कि अललाह तआ़ला किसी वजह से ऐसा नहीं चाहते) **तो वो लोग आप से कहते हैं कि आप** (अगर पैग़म्बर हैं तो) **यह मोजिज़ा क्यों न** (सामने) **लाए, आप कह दीजिए कि** (अपनी मर्ज़ी से मोजिज़ा लाना मेरे बस में नहीं बल्कि मेरा असली काम यह है कि) **मैं तो उसी हुक्म की ताबेदारी करता हूं जो मुझ पर मेरे रब की तरफ़ से** (वही से) **भेजा गया है** (इसमें तबलीग़ भी आ गई, और मेरा सबसे बड़ा मोजिज़ा यह क़ुरआन है जिस की शान यह है कि) **यह** (अपने आप में) **बहुत सी दलीलें लिए है तुम्हारे रब की तरफ़ से** (क्योंकि इस की हर सूरत एक मोजिज़ा है) **और** (रहा इस का नफ़ा तो वो) **हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो** (उस पर) **ईमान रखते हैं(203) और** (आप उन से यह भी कह दीजिए कि) **जब क़ुरआन पढ़ा जाया करे** (जैसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उस की तबलीग़ करें) **तो उस को कान लगा कर सुनो और चुप रहो ताकि तुम पर रहमत हो(204) और** (आप हर आदमी से यह भी कह दीजिए कि) **अपने रब की याद किया करो** (क़ुरआन से या तस्बीह से) **अपने दिल में** (यानी धीमी आवाज़ से) **लाचारी और डर के** (जज़्बे के) **साथ और** (चाहे) **ज़ोर की आवाज़ के मुक़ाबिले कम आवाज़ के साथ** (उसी लाचारी और डर के जज़्बे के साथ) **सुबह व शाम** (यानी सदा) **और भूलने वालों में से मत होना** (कि रोज़ाना का ज़िक्र करना भी छोड़ दो)**(205) बेशक जो** (फ़रिशते) **तेरे रब के पास** (यानी क़रीबी) **हैं वो उस की इबादत से घमन्ड नहीं करते** (यानी मुंह नहीं मोड़ते) **और उस की पाकी बयान करते हैं और उस को सजदा करते हैं(206)।**

नोटः- क़ुरआन की तिलावत के वक़्त और ख़ुतबा सुनने के वक़्त चुप रहना ज़रूरी है। एक हदीस में यह भी है कि "उस वक़्त कोई आदमी दूसरे को नसीहत के लिए ज़बान से यह भी न कहे कि चुप रहो"। (करना ही हो तो हाथ से इशारा कर दे)। (मआरिफ़ुल क़ुरआन)

इस सूरत की आख़री आयत आयते सजदा है जिस के पढ़ने और सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है।

एक हदीस में है कि जब कोई आदम का बेटा कोई आयते सजदा पढ़ता है और सजदा-ए-तिलावत करता है तो शैतान रोता हुआ भागता है और कहता है कि हाय अफ़सोस इन्सान को सजदा करने का हुक्म मिला और उसने कर लिया तो उस का ठिकाना जन्नत हुआ। और मुझे सजदे का हुक्म हुआ मैंने नाफ़रमानी की तो मेरा ठिकाना जहन्नम हुआ।

(मुस्लिम शरीफ़)

8-सूरत-अनफ़ाल

इस मदनी सूरत में 10 रूकू और 75 आयतें हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बहुत महरबान बड़ा रहम वाला है

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ لِلّٰهِ وَ الرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَ اَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۪ وَ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ
رَسُوْلَهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝۱

आयत न० 01

ये लोग आप से ग़नीमतों (यानी जंग में दुशमन के छोड़े हुए मालों) **का हुक्म पूछते हैं, आप कह दीजिए कि ये ग़नीमतें अल्लाह की हैं** (यानी अल्लाह उन का मालिक है उन के बारे में जो चाहे हुक्म दे) **और रसूल की हैं** (कि वो अल्लाह से हुक्म पाकर फैसला करेंगे यानी तुम्हारी राय का इसमें कोई दख़ल नहीं बल्कि उस का फ़ैसला शरीअ़त के हुक्म पर होगा)**, तो तुम** (दुनिया का लालच मत करो आख़रत के चाहने वाले रहो इस तरह पर कि) **अल्लाह से डरो और अपने आपस के ताल्लुक़ ठीक रक्खो** (कि आपस में हसद जलन न रहे) **और अल्लाह का और उस के रसूल का कहना मानो अगर** (सच में) **तुम ईमान वाले हो**(01)।

नोटः- ग़नीमत वो माल व साज़ो सामान जो दुशमनों से जंग के मौक़े पर मुसलमानों के हाथ आ जाए और शरीअ़त से उस का क़ानून यह बताया गया कि कुल माल को एक जगह जमा करके उस का पांचवां हिस्सा बैतुल माल (सरकारी ख़ज़ाने) में जमा किया जाए और बाक़ी सभी मुजाहिदों (फ़ौजियों) में बराबर-बराबर बान्ट दिया जाए। इस सूरत में जंगे बद्र के क़िस्से का बयान है।

اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ اِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّ عَلٰى رَبِّهِمْ
يَتَوَكَّلُوْنَ ۝۲ الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝۳ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ دَرَجٰتٌ
عِنْدَ رَبِّهِمْ وَ مَغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝۴ كَمَاۤ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪ وَ اِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ

لَكٰرِهُوْنَ ۙ﴿۵﴾ يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ﴿۶﴾ؕ

आयत न० 02 से 06

(बस) **ईमान वाले तो वो ही लोग होते हैं कि जब** (उन के सामने) **अल्लाह का नाम आए तो** (उस की बड़ाई सोच कर) **उन के दिल डर जाते हैं और जब अल्लाह की आयतें उन को पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो वो** (आयतें) **उन के ईमान को और ज़्यादा** (मज़बूत) **कर देती हैं और वो लोग अपने रब पर भरोसा करते हैं(02)** (और) **जो कि नमाज़ की पाबन्दी करते हैं और हम ने उन को जो कुछ दिया है वो उसमें से** (अल्लाह की राह में) **ख़र्च करते हैं(03)** (बस) **सच्चे ईमान वाले ये लोग हैं, उन के लिए बड़े-बड़े दर्जे हैं उन के रब के पास और** (उन के लिए) **मुआफ़ी है और इज़्ज़त की रोज़ी(04)** (और ग़नीमत के माल का लोगों की मर्ज़ी से न बान्टना बल्कि शरीअ़त के हिसाब से बान्टना चाहे लोगों को नागवार ही हो यह ऐसा ही है) **जैसा आप के रब ने आप के घर** (और बस्ती) **से हक़ काम के वास्ते आप को** (जंग के लिए) **रवाना किया और मुसलमानों का एक गिरोह** (अपने गिनती और जंगी सामान में कमी की वजह से) **इस को भारी समझता था(05) वो इस हक़ बात** (यानी जिहाद और फ़ौज के मुक़ाबिले के बारे में) **उस के खुल जाने के बावजूद** (अपने बचाव के लिए मशवरा करते हुए) **आप से इस तरह बहस कर रहे थे कि जैसे कोई उन को मौत की तरफ़ हांके लिए जाता है और वो** (मौत को जैसे) **देख रहे हैं** (मगर आख़िर कार अन्जाम उस का भी अच्छा हुआ कि इस्लाम जीता और कुफ़्र हारा)**(06)**।

नोटः- ऊपर आयतों में सच्चे व कामिल मोमिन की पांच ख़ूबियां बयान हुई हैं। एक तो अल्लाह का डर दूसरे ईमानी तरक़्क़ी यानी अल्लाह की आयतों को सुन कर ईमान में तरक़्क़ी और नेक कामों का शौक़ तीसरे अल्लाह पर भरोसा चौथे नमाज़ की पाबन्दी पांचवे अल्लाह के दिये रिज़्क़ में से अल्लाह की राह में ख़र्च करना।

وَ اِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ اَنَّهَا لَكُمْ وَ تَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَ يُرِيْدُ اللّٰهُ
اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَ يَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۙ﴿۷﴾ لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَ يُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَ لَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ﴿۸﴾ۚ
اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ﴿۹﴾ وَ مَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا
بُشْرٰى وَ لِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَ مَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۰﴾ؒ

आयत न० 07 से 10

और (तुम लोग उस वक़्त को याद करो) **जब कि अल्लाह तआला तुम से उन दो गिरोहों** (यानी कारोबारी क़ाफ़िला या दुशमन की फौज) **में से एक** (गिरोह) **का वादा कर रहे थे कि वो** (गिरोह) **तुम्हारे हाथ आजाएगा** (यानी तुम्हारा क़ब्ज़ा हो जाएगा यह वादा मुसलमानों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वास्ते से वही से हुआ था) **और तुम यह चाहते थे कि बिना असलहा वाला गिरोह** (यानी कारोबारी क़ाफ़िला) **तुम्हारे हाथ आजाए और अल्लाह तआला यह चाहते थे कि अपने हुक्मों से हक़ का हक़ होना** (जीत देकर) **साबित कर दे और** (यह चाहते थे) **कि इन काफ़िरों की जड़ काट डाले(07) ताकि हक़ का हक़ होना और झूट का झूट होना साबित कर दे चाहे मुजरिम लोगों को यह बात कितनी ही नागवार हो(08)** (और उस वक़्त को याद करो) **जब कि तुम अपने रब से** (अपनी गिनती और जंगी सामान में कम होने और दुशमनों को ज़्यादा देख कर) **फ़रियाद कर रहे थे तो अल्लाह तआला ने तुम्हारी फ़रियाद सुन ली** (और वादा किया) **कि तुम को एक हज़ार फ़रिशतों से मदद दूंगा जो लगातार आएंगे(09) और अल्लाह तआला ने यह मदद सिर्फ़ इसलिए की कि** (तुम को जीत की) **ख़ुशख़बरी हो और ताकि तुम्हारे दिलों को तसल्ली हो जाए, और** (असलीयत में) **मदद** (और कामयाबी) **सिर्फ़ अल्लाह तआला ही की तरफ़ से है, जो ज़बरदस्त** (ताक़त वाले और) **हिकमत वाले हैं(10)।**

नोटः- मक्के में मुसलमानों को जब बहुत सताया गया तो हिजरत करके मदीना आगये मगर मक्के के काफ़िर वहां भी चैन से रहने देना नहीं चाहते थे इसलिए मदीना पर हमला करने की तैयारी कर रहे थे उसी सिलसिले में एक काफ़िला कारोबार के लिए शाम गया जो वापस आ रहा था जिसमें जंग की तैयारी का सामान था हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस की ख़बर मिली तो आप ने दुशमन की ताक़त कमज़ोर करने के लिए उस क़ाफ़िले पर हमला करने का इरादा किया उधर मक्का वालों को ख़बर हुई तो उन्होंने क़ाफ़िले के बचाव के लिए अबुजहल की सरदारी में फ़ौज भेज दी अब इन दो गिरोहों में से एक से मुक़ाबिला होना था कारोबारी क़ाफ़िला या जंगी फ़ौज। मुसलमान चाहते थे कि मुक़ाबिला कारोबारी क़ाफ़िले से हो मगर अल्लाह तआला को कुछ और मन्जूर था तो मुक़ाबिला फ़ौज से हुआ बद्र के मैदान में यह जंग हुई इसलिए इस को जंगे बद्र कहते हैं जिसमें कमज़ोर मुसलमान जीते और काफ़िरों की ताक़तवर फ़ौज हार गई अल्लाह ने अपना वादा पूरा कर दिया।

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ وَيُذْهِبَ عَنكُمْ رِجْزَ
الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَىٰ قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ﴿١١﴾ إِذْ يُوحِي رَبُّكَ إِلَى الْمَلَائِكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا
الَّذِينَ آمَنُوا ۚ سَأُلْقِي فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوا مِنْهُمْ كُلَّ
بَنَانٍ ﴿١٢﴾ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ وَمَن يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ ﴿١٣﴾ ذَٰلِكُمْ
فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ ﴿١٤﴾

आयत न० 11 से 14

(उस वक़्त को याद करो) **जब कि अल्लाह तआला तुम पर** (से घबराहट दूर करने के लिए) **ऊंघ** (यानी नींद का झोंका) **भेज रहे थे अपनी तरफ़ से चैन देने के लिए और** (पानी की ज़रूरत पूरी करने के लिए) **तुम पर आसमान से पानी बरसा रहे थे ताकि उस पानी से तुम को** (बेवुज़ू या बेग़ुस्ल होने की हालत से) **पाक कर दे और तुम से शैतानी वसवसे को दूर कर दे** (कि अल्लाह की मदद का यक़ीन पक्का हो जाए) **और** (ताकि) **तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे और** (ताकि) **तुम्हारे पांव जमा** (दे कि तुम रेत में न धंसो यानी रेतीली ज़मीन को पानी से हमवार कर) **दे(11)** (और उस वक़्त को भी याद करो) **जब कि आप का रब** (उन) **फ़रिशतों को** (जो मदद के लिए उतारे गये थे) **हुक्म देता था कि मैं तुम्हारा साथी हूं तो तुम ईमान वालों की हिम्मत बढ़ाओ, मैं अभी काफ़िरों के दिलों में रौब डाले देता हूं सो तुम** (काफ़िरों की) **गर्दनों के ऊपर वार करो और उन के पोर-पोर को मारो(12) यह इस बात की सज़ा है कि उन्होंने अल्लाह की और रसूल की मुख़ालफ़त की, और जो अल्लाह की और उस के रसूल की मुख़ालफ़त करता है तो अल्लाह तआला** (उस को) **सख़्त सज़ा देते हैं** (चाहे दुनिया में या आख़िरत में या दोनों में)(13) **सो यह सज़ा** (तो) **अब चख लो और जान रक्खो काफ़िरों के लिए जहन्नम का अज़ाब** (तो) **तय ही है(14)।**

नोटः- जंगे बद्र में अल्लाह तआला ने मुसलमानों की हर तरह से मदद की इतनी बड़ी फ़ौज से मुक़ाबिले के वक़्त होने वाली घबराहट को दूर करने के लिए ऊंघ भेज दी जिस से ग़म हलका हो गया। पानी पर दुशमन ने पहले पहुंच कर क़ब्ज़ा कर लिया था इसलिए बारिश से पानी की ज़रूरत पूरी कर दी मुसलमानों की हिम्मत बढ़ाने और काफ़िरों के दिलों में रौब बिठाने के लिए फ़रिशते भेज दिये।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ۚ﴿۱۵﴾ وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗۤ
اِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۱۶﴾
فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۠ وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ
بَلَآءً حَسَنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۱۷﴾ ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۸﴾ اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ
الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّلَوْ كَثُرَتْ ۙ وَ
اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۹﴾

आयत न० 15 से 19

ऐ ईमान वालो जब तुम्हारा काफ़िरों से (जिहाद में) **आमने सामने मुक़ाबिला हो जाए तो उन से पीठ मत फेरना** (यानी जिहाद से मत भागना)**(15) और जो आदमी उन से इस मौक़े पर** (यानी मुक़ाबिले के वक़्त) **पीठ फेरेगा मगर हां जो लड़ाई के लिए चाल चलता हो या जो अपनी फ़ौज की तरफ़ पनाह लेने आता हो वो अलग है मगर उस के सिवा जो ऐसा करेगा उस पर अल्लाह का ग़ज़ब** (और गुस्सा) **पड़ेगा और उस का ठिकाना दोज़ख़ होगा, और वो बहुत ही बुरी जगह है(16) सो** (जिहाद में) **तुम ने उन** (काफ़िरों) **को क़त्ल नहीं किया लेकिन अल्लाह तआ़ला ने** (बेशक) **उन को क़त्ल किया** (यानी असली असर तो अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत में है)**, और** (इसी तरह) **आप ने मिट्टी** (उन की तरफ़) **नहीं फेंकी लेकिन अल्लाह तआ़ला ने** (असल में) **वो फेंकी और** (तुम्हारे हाथों से ये काम इसलिए कराए) **ताकि मुसलमानों को अपनी तरफ़ से** (उनके कामों का) **ख़ूब बदला दे, बेशक अल्लाह तआ़ला** (मोमिनों के बयान के) **ख़ूब सुनने वाले** (और उन के कामों के) **ख़ूब जानने वाले हैं(17) एक बात तो यह हुई और दूसरी बात यह है कि अल्लाह तआ़ला को काफ़िरों की हर चाल को कमज़ोर करना** (था और अपने से कमज़ोर से हार कर हौसला टूट जाता है इसलिए मुसलमानों के हाथों यह काम कराया गया) **था(18) अगर तुम लोग** (हक़ का) **फ़ैसला चाहते हो** (जैसा कि उन्होंने दुआ़ भी की थी कि जो हक़ पर हो वो जीत जाए) **तो वो फ़ैसला तुम्हारे सामने आ चुका** (कि जो हक़ पर था वो जीत गया)**, और अगर** (अब भी सच्चाई पूरी तरह साफ़ हो जाने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुख़ालफ़त से) **बाज़ आजाओ तो यह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है, और अगर** (अब भी बाज़ न आए बल्कि) **तुम फिर वो ही काम करोगे** (यानी मुख़ालफ़त) **तो हम भी फिर ये ही काम करेंगे** (यानी

तुम्हें हार और मुसलमानों को जीत देंगे), **और** (अगर तुम को अपनी फ़ौज का घमन्ड हो कि अब की बार इससे ज़्यादा जमा कर लेंगे तो याद रक्खो कि) **तुम्हारी फ़ौज तुम्हारे ज़रा भी काम न आएगी चाहे कितनी ही ज़्यादा हो और सच बात यह है कि अल्लाह तआ़ला** (असल में) **ईमान वालों के साथ** (है यानी उन का मददगार है चाहे किसी वजह से किसी वक़्त इन की जीत न हो लेकिन असली जीत के हक़दार ये ही हैं इसलिए इन से मुक़ाबिला करना अपना ही नुक़सान करना) **है**(19)।

नोटः- जंगे बद्र के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक मुट्ठी मिट्टी की अल्लाह के हुक्म से दुशमनों की तरफ़ फेंकी जिस की कंकरियां हर एक की आंखों में जा गिरीं जिससे दुशमन परीशान हो कर भागने लगे और यह मोजिज़ा मुसलमानों की जीत की एक वजह बन गया।

मसअलाः- अगर जिहाद में मुक़ाबिले के वक़्त दुशमनों की गिनती दो गुने से ज़्यादा है तो मुसलमानों को मैदान छोड़ देना जाइज़ है वर्ना मैदान छोड़ना गुनाह है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَ اَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ۚ ۝٢٠ وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا
وَ هُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۝٢١ اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝٢٢ وَ لَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ
خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ وَ لَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّ هُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٢٣ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَ لِلرَّسُوْلِ اِذَا
دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَ قَلْبِهٖ وَ اَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٢٤

आयत न० 20 से 24

ऐ ईमान वालो कहना मानो अल्लाह और उसके रसूल का और इस (ताबेदारी) **से मुंह मत मोड़ो और तुम** (ऐतक़ाद से) **सुन तो लेते ही हो** (यानी जैसा ऐतक़ाद से सुन लेते हो ऐसा ही अमल भी किया करो)(20) **और तुम उन लोगों की तरह मत हो जाना जो कहते हैं कि हम ने सुन लिया मगर वो** (असलीयत में) **सुनते** (नहीं क्योंकि जब मानने का इरादा) **नहीं**(21) **बेशक सबसे बुरे लोग अल्लाह के नज़दीक वो** (लोग) **हैं जो** (हक़ बात को ऐतक़ाद के साथ सुनने से) **बहरे हैं** (और हक़ बात कहने से) **गूंगे हैं** (और) **जो कि** (हक़ बात को) **ज़रा नहीं समझते**(22) **और अगर अल्लाह तआ़ला उन में कोई भलाई** (यानी हक़ की चाहत) **देखते तो उन को** (ऐतक़ाद के साथ) **सुनने की तौफ़ीक़ देते, और अगर** (अल्लाह तआ़ला) **उन को अब सुना दें** (जब कि हक़ की

चाहत नहीं) **तो ज़रूर मुंह फेर कर चल देंगे(23) ऐ ईमान वालो तुम अल्लाह और उसके रसूल का कहना मानो जब कि रसूल** (जिन का हुक्म अल्लाह ही का हुक्म है) **तुम को तुम्हारी ज़िन्दगी बख़्श चीज़** (यानी दीन) **की तरफ़ बुलाते हों** (तो इस हालत में जबकि हर तरह तुम्हारा ही फ़ाइदा है कोई वजह नहीं कि तुम बात न मानो) **और जान लो कि अल्लाह तआ़ला दीवार बन जाया करता है आदमी के और उस के दिल के बीच में** (इस तरह से कि मोमिन के दिल में ताबेदारी की बरकत से कुफ़्र व गुनाह को नहीं आने देता और काफ़िर के दिल में मुख़ालफ़त की नुहूसत से ईमान व नेकी को नहीं आने देता) **और** (यह भी जान लो कि) **बेशक तुम सब को अल्लाह ही के पास जमा होना है** (उस वक़्त ताबेदारी पर इनआ़म मिलेगा और मुख़ालफ़त पर सज़ा होगी)(24)।

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपनी दुआओं में अक्सर यह दुआ किया करते थे। ''या मुक़ल्लिबल क़ुलूबि सब्बित क़ल्बी अ़ला दीनिक''। यानी ऐ दिलों के पलटने वाले मेरे दिल को अपने दीन पर जमाए रखिए।

وَ اتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ﴿٢٥﴾ وَ اذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ
قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَ اَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَ رَزَقَكُمْ
مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٢٦﴾ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَ الرَّسُوْلَ وَ تَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَ اَنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٧﴾ وَ اعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَ اَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّ اَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٨﴾

आयत न० 25 से 28

और (दूसरों को भी नेक काम करने और बुरी बातों से बचने की नसीहत करते रहो ताकि) **तुम ऐसे वबाल** (यानी अ़ज़ाब) **से बचो जो सिर्फ़ उन्हीं लोगों पर न पड़ेगा जो तुम में उन गुनाहों के करने वाले** (होंगे बल्कि उन गुनाहों को देख कर जिन्होंने हिम्मत के बावजूद रोकने की कोशिश नहीं की वो भी इसमें साझी) **होंगे, और यह जान लो कि अल्लाह तआ़ला सख़्त सज़ा देने वाले हैं(25) और** (अल्लाह तआ़ला की नेमतों को याद करो और ख़ास कर) **उस हालत को याद करो जब कि तुम** (एक वक़्त में हिजरत से पहले गिनती में भी) **कम थे** (और ताक़त में भी और मक्के की) **ज़मीन में कमज़ोर गिने जाते थे** (और कमज़ोरी की वजह से) **इस बात से डरते थे कि तुम को** (मुख़ालिफ़) **लोग नोच खसोट न लें सो** (ऐसी हालत में) **अल्लाह तआ़ला ने तुम को** (मदीने

में चैन से) **रहने की जगह दी और तुम को अपनी मदद से ताक़त दी** (सामान से भी और गिनती बढ़ा कर भी) **और** (ख़ुशहाली देकर) **तुम को अच्छी-अच्छी चीज़ें दीं ताकि तुम** (इन नेमतों का) **शुक्र करो** (और बड़ा शुक्र यह है कि कहना मानो)(26) **ऐ ईमान वालो तुम अल्लाह और रसूल के हक़ों** (के अदा करने) **में गड़ बड़ मत करो और न आपस की अमानतों में गड़बड़ करो और तुम तो** (इस का नुक़सान) **जानते हो**(27) **और** (अक्सर माल व औलाद की मुहब्बत दीन के कामों में रूकावट बन जाती है इसलिए) **तुम इस बात को जान लो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद एक इम्तिहान की चीज़ है** (कि देखें कौन उन से ज़्यादा मुहब्बत रखता है और कौन अल्लाह से ज़्यादा मुहब्बत रखता है) **और** (अगर उन के नफ़े की तरफ़ ध्यान जाए तो तुम) **इस बात को भी जान लो कि अल्लाह तआ़ला के पास** (उन लोगों के लिए जो अल्लाह की ताबेदारी करते हैं) **बहुत बड़ा बदला** (मौजूद) **है** (कि उस के सामने ये फ़ना हो जाने वाले नफ़े कुछ नहीं)(28)

नोटः- एक हदीस में है कि जो लोग किसी ज़ालिम को देखें और ज़ुल्म से उस का हाथ न रोकें तो क़रीब है कि अल्लाह तआ़ला उन सब पर अपना अज़ाब आम कर दें। (तिरमिज़ी)

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّ يُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو
الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿۲۹﴾ وَ اِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَ يَمْكُرُوْنَ وَ يَمْكُرُ
اللّٰهُ ؕ وَ اللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ﴿۳۰﴾ وَ اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّآ
اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿۳۱﴾ وَ اِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ السَّمَآءِ
اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿۳۲﴾ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَ اَنْتَ فِيْهِمْ ؕ وَ مَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَ هُمْ
يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿۳۳﴾

आयत न० 29 से 33

(और) **ऐ ईमान वालो** (कहना मानने की और बरकतें सुनो कि) **अगर तुम अल्लाह से डर** (कर कहना मान)**ते रहोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम को एक फ़ैसले की चीज़** (यानी ऐसी समझ) **देगा** (जिसमें अच्छे बुरे में फ़ैसला करना आसान हो जाता है) **और तुम से तुम्हारे गुनाह दूर कर देगा और तुम को मुआफ़ कर देगा, और अल्लाह बड़ी महरबानी वाला है** (ख़ुदा जाने अपनी महरबानी से और क्या-क्या देदे जो सोच भी नहीं सकते)(29) **और** (ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम मुसलमानों को) **वो क़िस्सा भी सुनाइये जब कि काफ़िर लोग आप के बारे में** (बुरी-बुरी) **कार्रवाइयां सोच रहे थे कि** (या तो) **आप को क़ैद कर लें या आप को क़त्ल कर दें या आप को वतन से निकाल दें, और वो तो अपनी कोशिशें कर रहे थे और अल्लाह तआ़ला अपनी कोशिश** (इन कार्रवाइयों को दूर करने के लिए) **कर रहे थे, और सबसे अच्छी कोशिश करने वाला अल्लाह है** (जिसके सामने सारी चालें उड़नछू हो गईं और आप बाल बाल बचे और सही सालिम मदीने आ पहुंचे)**(30) और** (इन काफ़िरों की यह हालत है कि) **जब इन के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो कहते हैं कि हम ने सुन** (कर देख) **लिया** (यह तो कोई मोजिज़ा नहीं क्योंकि) **अगर हम चाहें तो इस की बराबर हम भी कह कर ले आएं** (बस) **यह** (क़ुरआन) **तो** (अल्लाह का कलाम व मुजिज़ा) **कुछ भी नहीं सिर्फ़ पिछले लोगों की कहानियां हैं**(31) **और** (इससे बढ़ कर बात यह है) **जब कि उन लोगों ने** (यह भी) **कहा कि या अल्लाह अगर यह क़ुरआन सचमुच आप की तरफ़ से है तो हम पर** (उस के न मानने की वजह से) **आसमान से पत्थर बरसाइये या हम पर कोई** (और) **दर्दनाक अज़ाब भेज दीजिए**(32) **और अल्लाह तआ़ला ऐसा न करेंगे कि उन में आप के मौजूद होते हुए उनको** (ऐसा) **अज़ाब दें, और** (इसी तरह) **अल्लाह तआ़ला उन को** (ऐसा) **अज़ाब न देंगे जिस हालत में कि वो** (तौबा) **इस्तिग़फ़ार भी करते हैं** (चाहे वो ईमान न होने की वजह से आख़रत में नफ़ा न दे मगर दुनिया का अज़ाब तो इस नेक काम की वजह से टल ही सकता है)(33)।

नोटः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत से इस उम्मत पर ऐसा आम अज़ाब न आएगा जिससे पूरी उम्मत हलाक हो जाए जैसा कि पहली उम्मतों पर ऐसा अज़ाब भी आया।

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ؕ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا
الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٤﴾ وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ؕ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٥﴾ اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا
ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٦﴾ لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ
الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ﴿٣٧﴾ قُلْ
لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٣٨﴾

आयत न० 34 से 38

और उन में क्या अच्छाई है कि अल्लाह तआ़ला उन को (ज़रा भी) **सज़ा न दे जब कि** (उन की हरकतें ऐसी हैं कि उन पर सज़ा ज़रूरी है जैसे) **वो लोग** (पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और मुसलमानों को) **मस्जिदे हराम** (यानी ख़ाना काबा में जाने और उसमें नमाज़ पढ़ने और तवाफ़ करने) **से रोकते हैं** (जैसे हुदैबिया के मौक़े पर हुआ और मक्के में रहते हुए भी रोकते थे) **जब कि वो लोग इस मस्जिद के मुतवल्ली** (बनने के भी लाइक़) **नहीं** (और रोकने का हक़ तो मुतवलली को भी नहीं होता), **इस के मुतवल्ली** (बनने के लाइक़) **तो सिवा परहेज़गार** (और नेक लोगों) **के** (कि वो ईमान वाले हैं) **और कोई लोग नहीं लेकिन उन में से अक्सर लोग** (इस बात को) **नहीं जानते(34) और** (जो असली नमाज़ी थे उन को तो मस्जिद से रोका और ख़ुद उन की इबादत भी क्या कि) **उन की नमाज़ ख़ाना काबा के पास सिर्फ़ यह थी सीटियां बजाना और तालियां बजाना** (यानी बजाए नमाज़ के उन की ये हरकतें होती थीं), **सो अब इस अज़ाब का मज़ा चक्खो अपने कुफ़्र की वजह से(35) बेशक ये काफ़िर लोग अपने मालों को इसलिए ख़र्च कर रहे हैं कि अल्लाह की राह से** (यानी दीन से लोगों को) **रोकें, सो ये लोग तो अपने मालों को** (इस काम के लिए) **ख़र्च करते ही रहेंगे** (मगर) **फिर** (आख़ीर में जब नाकामी दिखाई देगी) **वो माल उन के हक़ में पछतावे का सामान बन जाएंगे** (कि बेबात ख़र्च किया और) **फिर** (आख़िर) **हार** (ही) **जाएंगे, और** (आख़रत की सज़ा वो अलग है कि) **काफ़िर लोगों को दोज़ख़ की तरफ़** (ले जाने के लिए क़ियामत में) **जमा किया जाएगा(36) ताकि अल्लाह तआ़ला नापाक** (लोगों) **को पाक** (लोगों) **से अलग कर दें** (क्योंकि जब दोज़ख़ वालों को दोज़ख़ की तरफ़ लाएंगे तो जन्नत वाले उन से अलग रह जाएंगे) **और** (उन से अलग करके) **नापाकों को एक दूसरे से मिला दे यानी उन सब को एक जगह कर दे फिर उन सब को जहन्नम में डाल दे, ऐसे ही लोग पूरे नुक़सान में हैं(37)** (ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप इन काफ़िरों से कह दीजिए कि अगर ये लोग** (अपने कुफ़्र से) **बाज़ आजाएं** (और मुसलमान हो जाएं) **तो उन के सारे गुनाह जो** (इस्लाम से) **पहले हो चुके हैं सब मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे, और अगर अपनी वो ही** (कुफ़्र की) **आदत रक्खेंगे तो** (उन को सुना दीजिए कि) **पहले काफ़िरों के हक़ में** (जो हमारा) **क़ानून जारी हो चुका है** (कि दुनिया में हलाक और आख़रत में अज़ाब वो ही तुम्हारे लिए भी होगा)(38)।

नोटः- मस्जिद के मुतवल्ली को यह तो हक़ है कि ऐसे छोटे बच्चों जिन से नापाकी का ख़तरा है और

पागलों को मस्जिद में न आने दे और आपसी झगड़े वहां न होने दे वैसे किसी को रोकने का हक़ नहीं।

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٣٩ وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ۭ نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝٤٠

आयत न० 39 से 40

और (ऐ मुसलमानों) **तुम** (इन काफ़िरों से उस हद तक) **जंग करो जब तक फ़साद दूर न हो जाए** (यानी मुसलमानों के लिए उन से ख़तरा दूर न हो जाए) **और दीन ख़ालिस अल्लाह का हो जाए** (यानी इस्लाम ऐसा छा जाए कि वो ग़ैरों के ज़ुल्म व सितम से मुसलमानों की हिफ़ाज़त कर सके), **फिर अगर वो बाज़ आजाएं** (और ईमान ले आएं या सुलह कर लें तो मान लो क्योंकि) **अल्लाह तआ़ला उन के कामों को अच्छी तरह देखते हैं** (अगर वो धोका देंगे तो अल्लाह तआ़ला आप समझ लेंगे)(39) **और अगर वो बाज़ न आएं तो** (अल्लाह का नाम लेकर उन के मुक़ाबिले से मत हटो और) **यक़ीन रक्खो कि अल्लाह तआ़ला** (उन के मुक़ाबिले में) **तुम्हारा साथी है, वो बहुत अच्छा साथी है और बहुत अच्छा मददगार है** (सो वो तुम्हारी हिमायत और मदद करेगा)(40)

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिससे समझौता सुलह का हो चुका हो जो आदमी उस पर कोई ज़ुल्म करे या उस को नुक़सान पहुंचाए या उससे कोई ऐसा काम ले जो उस की ताक़त से ज़्यादा है या उस की कोई चीज़ बग़ैर उस की दिली रज़ामन्दी के लेले तो मैं क़ियामत के दिन उस मुसलमान के ख़िलाफ़ उस आदमी की हिमायत करूंगा जिससे सुलह का समझौता था। (अबूदाऊद)